गायन, वादन और नृत्य-सम्बन्ध

संगीत-साहित्य

की

सविवरण

मूल्य-तालिका



संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)



अकारादि-क्रम से राग-वर्णन के १०० दोहे

प्रस्तुत दोहों में आनेवाले कुछ विशिष्ट शब्दों के अर्थ इस प्रकार समझने चाहिए :—

- 'सप संवाद' का अर्थ है—षड्ज वादी और पंचम संवादी। इसी प्रकार 'मस का है संवाद' का अर्थ है—म वादी, सा संवादी इत्यादि।
- 'टार, हानि, त्याग, काट, छीन, बरजि'—इन शब्दों को वर्जित स्वर के अर्थ में लिया गया है।
- 'दोउ नी लगें' का अर्थ है—कोमल निषाद और शुद्ध निषाद; इसी प्रकार 'गनि दोनों' का अर्थ है—ग, नि कोमल भी और शुद्ध भी।
- ये दोहे उत्तर-भारतीय संगीत-पद्धति के अन्तर्गत बरते जाने वाले कुछ प्रचलित रागों के दिए गए हैं, जिन्हें बड़ी सरलता से कंठस्थ कर राग-ज्ञान की वृद्धि की जा सकती है।

अडाणा

कोमल गध, दोनोंहि नी, स-म संवाद बताहि।
चढ़त ग, उतरत धा बरजि, राग अडाणा माँहि॥

अल्हैयाबिलावल

आरोहन मध्यम नहीं, धग संवाद बखान।
उतरत कोमल नी लखै, ताहि अल्हैया जान॥

अहीरभैरव

रेनी कोमल सुर भले, मस को है संवाद।
भैरव के ही थाट सों, सुन अहीर को नाद॥

आनन्दभैरव

भैरव के ही मेल में, धैवत शुद्ध लगाय ।
स-म संवादी वादि सों, आनँदभैरव गाय ॥

आभोगी

पनि वर्जित, कोमल ग लखि, औडुव जाति बनाइ ।
स-म वादी संवादि तें, आभोगी सुखदाइ ॥

आभोगीकान्हरा

सुन आभोगीकान्हरा, कोमल है गन्धार ।
पनि वर्जित कर गाइए, मस संवाद उचार ॥

आसावरी

गाधानी कोमल लगें, चढ़त गनी न सुहात ।
धग वादी संवादि तें, आसावरी कहात ॥

ककुभ

ककुभ बिलावल मेल में, दोनों लगत निषाद ।
प्रातकाल सम्पूर्ण लखि, मस का है संवाद ॥

काफी

कोमल गनी लगायकर, गावत आधी रात ।
प-स वादी संवादि तें, काफी राग सुहात ॥

कामोद

कल्याणहि के मेल में, दोनों मध्यम लाय ।
परि वादी संवादि कर, तब कामोद सुहाय ॥

कालिङ्गड़ा

रिध कोमल कर गाइए, भैरव थाट प्रमान ।
सप संवादी वादि सों, कालिंगड़ा पहचान ॥

केदार

दोनों मा केदार में, सम संवाद सम्हार ।
आरोहन रिग बरजकर, उतरत अल्प गँधार ॥

कौंसीकान्हरा

कोमल गनी लगायकर, मध्य रात्रि में गात ।
सुमधुर कौंसीकान्हरा, मस संवाद सुहात ॥

खट

गध कोमल कर गाइए, दोऊ लगत निषाद ।
सम्पूरन खट राग में, धग को है संवाद ॥

खमाज

दोनों नी नीके लगें, आरोही रे हानि ।
गनि वादी संवादि तें, खम्माजहि पहचानि ॥

गारा

कोमल तीवर लगत हैं, गनि के दोनों रूप ।
गनि बादी संवादि तें, गारा राग अनूप ॥

गुणकरी

जब भैरव के थाट सों, गनि सुर दिए हटाय ।
धरि वादी संवादि तें, राग गुणकरी गाय ॥

गुणकली

शुद्ध बिलावल अंग सों, प्रथम प्रहर दिन मान ।
सप वादी संवादि तें, राग गुणकली जान ॥

गुर्जरीतोड़ी

रिगधा कोमल, तीव्र मा, पंचम दीनों छोड़ि ।
धरि बादी संवादि तें, कहत गुर्जरीतोड़ि ॥

गोरखकल्याण

मस वादी संवादि करि, वर्जित गा सुर मान।
कोमल नी नीको लगे, सुन गोरखकल्यान ॥

गौड़मल्लार

गनि के दोनों रूप लखि, चढ़ते अल्प सम्हार।
मस वादी संवादि तें, कहत गौड़मल्लार ॥

गौड़सारंग

दोऊ मध्यम लगि रहे, कल्याणहि के अंग।
गध वादी संवादि तें, बनत गौड़सारंग ॥

गौरी (पूर्वी मेल)

रिध कोमल, दोनोंहि मा, चढ़ते धग न सुहाय।
गौरी पूरवि थाट की, रिप संवाद कहाय ॥

गौरी (भैरव मेल)

गौरी भैरव मेल की, रिध कोमल कर मान।
चढ़ते धग को बरजकर, रिप संवाद प्रमान ॥

चन्द्रकौंस

रिप वर्जित, कोमल गनी, औडुव कर विस्तार।
मस वादी संवादि सों, चन्द्रकौंस तैयार ॥

छायानट

जबहिं थाट कल्याण में, दोनों मध्यम पेखि।
परि वादी संवादि सों, छायानट को देखि ॥

जङ्गला

कोमल तीवर गधनि के, दोऊ रूप सुहायँ।
सम्पूरन, संवाद सप, गुनी जंगला गायँ ॥

जलधरकेदार

गनि सुर वर्जित कर दिए, औडुव रूप सम्हार।
मस वादी संवादि तें, कहँ जलधरकेदार ॥

जैजैवन्ती

तीवर कोमल रूप दो, गनि के दिए लगाय।
रिप वादी संवादि सों, जैजैवन्ति कहाय ॥

जैत

जबहिं मारवा थाट सों, मनि सुर दिए निकार।
रे कोमल, संवाद प-स, औडुव जैत सम्हार ॥

जोगिया

आरोही वर्जित गनी, अवरोहन गा त्याग।
रिध कोमल, संवाद मस, कहत जोगिया राग ॥

जौनपुरी

कोमल गधनी सुर कहे, आरोही गा हानि।
वादी धा, संवादि गा, जौनपुरी पहचानि ॥

झिंझोटी

गा वादी, संवादि नी, कोमल लियो निषाद।
राग झिंझोटी गाइए, प्रथम रात्रि के बाद ॥

झीलफ (आसावरी थाट)

धग वादी संवादि कर, गधनी कोमल जान।
आसावरि के थाट में, झीलफ को पहचान ॥

झीलफ (भैरव थाट)

कोमल धैवत सुर लियो, रेनी दीने काट।
धग वादी संवादि तें, झीलफ भैरव थाट ॥

तिलककामोद

षाडव-सम्पूरन कह्यो, आरोही धा नाहिं ।
रिप वादी संवादि तें, तिलककमोद बताहि ॥

तिलङ्ग

रिध वर्जित, दोनों हि नी, लखि खम्माजहि अंग ।
गनि वादी संवादि कर, गावत राग तिलंग ॥

तोड़ी

रिगधा कोमल, तीव्र मा, धग संवाद बखान ।
सम्पूरन तोड़ी कही, समय दोपहर मान ॥

दरबारीकान्हरा

गधनी कोमल जानिए, उतरत धैवत नाहिं ।
सुन दरबारीकान्हरा, रिप संवाद बताहि ॥

दीपक (पूर्वी मेल)

रिध कोमल, संवाद सप, मध्यम तीव्र लगाय ।
चढ़त रि, उतरत नी बरजि, दीपक राग बताय ॥

दीपक (बिलावल मेल)

आरोही रे बरजकर, दोनों नी सों खेल ।
दीपक गनि संवाद कर, मान बिलावल मेल ॥

दुर्गा (खमाज मेल)

जबहिं मेल खम्माज में, रिप सुर वर्जित कीन्ह ।
दोनों नी, संवाद गनि, औडुव दुर्गा चीन्ह ॥

दुर्गा (बिलावल मेल)

मस वादी संवादि लखि, गनि सुर वर्जित मान ।
तबहिं बिलावल मेल की, दुर्गा ले पहचान ॥

देशकार

जबहिं बिलावल मेल सों, मनि सुर दिए निकार।
धग वादी संवादि तें, औडुव देशीकार ॥

देस

वादी रे, संवादि पा, दोनों नी लग जायँ।
देस राग सम्पूर्ण कर, मध्य रात्रि में गायँ ॥

देसी

निध के दोनों रूप ले, गध वर्जित आरोहि।
गा कोमल, संवाद परि, जानत देसी सोहि ॥

धनाश्री

कोमल गनी लगायकर, आरोहन रिध त्याग।
पस वादी संवादि तें, कहत धनाश्री राग ॥

धानी

वादी गा संवादि नी, गनि सुर कोमल जान।
रिध वर्जित कर गाइए, औडुव धानी मान ॥

नट

शुद्ध बिलावल मेल में, धग वर्जित अवरोहि।
मस वादी संवादि सों, नट गावत सब कोहि ॥

नन्द

दोनों मध्यम लग रहे, आरोहन रे हानि।
सप वादी संवादि तें, नन्द राग पहचानि ॥

नायकीकान्हरा

दोनों नी ले, बरजि धा, कोमल कर गन्धार।
कहत नायकीकान्हरा, मस संवाद सम्हार ॥

पञ्चम

मा दोनों, रे कोमलहि, पंचम दीनों त्याग ।
मस वादी संवादि सों, षाडव पंचम राग ॥

पटमञ्जरी (काफी थाट)

आरोहन धग अल्प ले, सप संवाद बनाय ।
गनि दुउ, काफी मेल की, पटमंजरी कहाय ॥

पटमञ्जरी (बिलावल मेल)

सप वादी संवादि सों, मध्य रात्रि में गाय ।
शुद्ध बिलावल मेल की, पटमंजरी सुहाय ॥

परज

दोनों मध्यम लीजिए, रिध कोमल सुखदाइ ।
सप वादी संवादि लखि, गुनिजन परज सुहाइ ॥

पहाड़ी

औडव करके गाइए, मनि को दीजे त्याग ।
सप वादी संवादि तें, कहत पहाड़ी राग ॥

पीलू

गधनी तीनों सुरन कैं, कोमल तीवर रूप ।
गनि वादी संवादि लखि, पीलू राग अनूप ॥

पूरिया

थाट मारवा में जबहिं, दीनों पंचम त्याग ।
गनि वादी संवादि सों, कह्यो पूरिया राग ॥

पूरियाधनाश्री

मध्यम तीव्र लगायकर, रिध कोमल सुर मान ।
राग पूरियाधनाश्री, परि संवाद बखान ॥

पूर्वी

रिध कोमल कर गाइए, दोनों मध्यम मान ।
गनि वादी संवादि सों, राग पूर्वी जान ॥

बहार

चढ़त रि, उतरत धा बरजि, कोमल कर गन्धार ।
दोनों नी, संवाद मस, षाडव राग बहार ॥

बागेश्री

गनि कोमल, संवाद मस, आरोही रिप काट ।
मधुर राग बागेसरी, लखि काफी के थाट ॥

बिलावल

शुद्ध सुरन सों गाइए, धग संवाद बखान ।
राग बिलावल को समय, प्रात:काल प्रमान ॥

बिलासखानी तोड़ी

आरोही मनि अल्प ले, रिगधनि कोमल जानि ।
वादी धा, संवादि गा, तोड़ी बिलासखानि ॥

बिहाग

गनि संवाद बनायकर, चढ़ते रिध को त्याग ।
रात्रि दूसरे पहर में, गावत राग बिहाग ॥

भटियार

आरोही नी अल्प ले, मध्यम दोउ सम्हार ।
रे कोमल, संवाद मस, कहत राग भटियार ॥

भीमपलासी

जब काफी के मेल में, चढ़ते रिध को त्याग ।
गनि कोमल, संवाद मस, भीमपलासी राग ॥

भूपाली

मनि वर्जित कर गाइए, मान थाट कल्यान ।
गध वादी संवादि सों, भूपाली पह्चान ॥

भैरव

धरि वादी संवादि कर, रिध कोमल सुर मान ।
प्रात समय नीको लगे, भैरव राग महान ॥

भैरवी

कोमल सबही सुर भले, मध्यम वादि बखान ।
षड्ज जहाँ संवादि है, ताहि भैरवी जान ॥

मधुवन्ती

गा कोमल, मा तीव्र है, चढ़ते रिध न सुहाय ।
प-स वादी संवादि सों, गुनि मधुवन्ती गाय ॥

मध्यमादिसारंग

धग वर्जित कर गाइए, जब काफी के अंग ।
नी कोमल, संवाद रिप, मध्यमादिसारंग ॥

मलुहाकेदार

थाट बिलावल में जबहिं, चढ़ते रिध को टार ।
स-म वादी संवादि सों, कह मलुहाकेदार ॥

मारवा

रिध वादी संवादि कर, पंचम वर्जित कीन्ह ।
रे कोमल, मध्यम कड़ी, राग मारवा चीन्ह ॥

मारूबिहाग

मध्यम तीवर सुर लियो, चढ़ते रिध को त्याग ।
गनि वादी संवादि सों, गावत मारुबिहाग ॥

मालकौंस

रिप वर्जित, औड़ुव मधुर, सब कोमल सुर मान ।
मस वादी संवादि सों, मालकौंस पहचान ।।

मियाँमल्लार

गा कोमल, संवाद मस, उतरत धैवत टार ।
दोउ निषाद लगायकर, गा मीयाँमल्लार ।।

मुलतानी

कोमल रिगधा, तीव्र मा, प-स संवाद सजाय ।
चढ़ते रिध को त्यागकर, मुलतानी समझाय ।।

मेघमल्लार

जब काफी के मेल सों, धग सुर दीने टार ।
दोनों नी, संवाद सप, औड़ुव मेघमलार ।।

माँड

सप वादी संवादि कर, नी स्वर कम्पित होय ।
शुद्ध और सम्पूर्ण है, माँड राग कह सोय ।।

यमन

शुद्ध सुरन के संग जब, मध्यम तीवर होय ।
गनि वादी संवादि तें, यमन कहत सब कोय ।।

रामकली

जब मा-नी के रूप दो, भैरव मेल लखाय ।
रिध कोमल, संवाद प-स, रामकली बन जाय ।।

ललित

दोनों मा, कोमल रिषभ, पंचम वर्जित जान।
मस वादी संवादि सों, ललित राग पहचान ॥

वराटी

मा तीवर, कोमल रिषभ, गध संवाद सँजोय।
थाट मारवा से प्रगट, राग वराटी होय ॥

वसन्त

रिध कोमल, संवाद स-म, मा के दोनों रूप।
आरोही पंचम बरजि, राग वसन्त अनूप ॥

विभास (भैरव मेल)

जब भैरव के मेल सों, मनि सुर दिए निकास।
रिध कोमल, संवाद धग, औडुव रूप विभास ॥

विभास (मारवा मेल)

रे कोमल, मध्यम कड़ी, धग संवाद बनाय।
थाट मारवा से प्रगट, राग विभास सुहाय ॥

वृन्दावनीसारङ्ग

गध सुर वर्जित कर दिए, ले काफी को अंग।
दोनों नी, संवाद रिप, वृन्दावनिसारंग ॥

शङ्करा

आरोही रेमा बरजि, अवरोही मा त्याग।
गनि वादी संवादि सों, कहत शंकरा राग ॥

शिवरञ्जनी

गा कोमल, संवाद प-स, मनि सुर दिए हटाय ।
मध्यरात्रि औड़व मधुर, शिवरंजनी सुहाय ॥

शुद्धकल्याण

कल्याणहि के मेल में, चढ़ते मनी हटाय ।
यही शुद्धकल्याण है, गध संवाद सुहाय ॥

शुद्धसारंग

वर्जित कर गन्धार को, गावत काफी अंग ।
दोऊ मनि, संवाद रिप, कहत शुद्धसारंग ॥

सिन्धुभैरवी

आसावरि के ठाठ में, गनिधा कोमल लेख ।
मस वादी संवादि सों, सिन्धुभैरवी देख ॥

सूरमल्लार

आरोहन गन्धार नहिं, अवरोही धग टार ।
स-म संवादी वादि सों, जानत सूरमलार ॥

सूहा (कान्हरा)

जब काफी के मेल सों, धैवत दियो हटाय ।
गनि कोमल, संवाद मस, सूहा राग सुहाय ॥

सोरठ

गध वर्जित आरोह में, रिध संवाद अनूप ।
दोनों नी नीके लगें, लखि सोरठ को रूप ॥

सोहनी

तीवर मा, कोमल रिषभ, पंचम वर्जित मान।
धग वादी संवादि तें, कियो सोहनी गान ॥

हमीर

कल्यानहि के मेल में, दोनों मध्यम जान।
धग वादी संवादि सों, राग हमीर बखान ॥

हिण्डोल

रिप सुर वर्जित मानकर, मध्यम तीवर बोल।
धग वादी संवादि तें, औडुव राग हिंडोल ॥

हंसध्वनि

जबहिं बिलावल मेल में, मध सुर वर्जित कीन्ह।
सप संवाद बनायकर, हंसध्वनि को चीन्ह ॥

['बसंत' कृत 'रागकोष' से उद्धृत]

संगीत

[शास्त्रीय संगीत का सन् १६३५ से प्रकाशित प्रतिनिधि मासिक पत्र]

वार्षिक मूल्य १०)८५, प्रति साधारण अंक १)

Foreign Yearly Subs. Sh. 13/- $ 2.00

इसमें प्रायः निम्नलिखित सामग्री प्रकाशित होती है :

❋ राग-रंग	❋ राग-दर्शन
❋ तार-झंकार	❋ ताल-तरंग
❋ थिरकन	❋ दाक्षिणात्य संगीत
❋ फिल्म-संगीत	❋ संगीत-वाङ्मय
❋ संगीत के सितारे	❋ हमारे संगीत-रत्न
❋ संगीत-साधकों से भेंट	❋ आपके अपने स्वर
❋ प्रश्नोत्तर	❋ सितारों का संगीत
❋ अप्रचलित राग	❋ वाद्यवृन्द
❋ लोक-लहरी	❋ एक अध्ययन
❋ कल के कलाकार	❋ गगन-संगीत
❋ लोक-मानस के सुरीले साधक	❋ संगीत-जगत्, इत्यादि।

इन स्तम्भों के अतिरिक्त सामयिक लेख, आर्टपेपर पर संगीतज्ञों के छायाचित्र आदि अनेक आकर्षण होते हैं। प्रत्येक वर्ष जनवरी में लगभग ४) मूल्य का विशेषांक वार्षिक ग्राहकों को वार्षिक मूल्य में ही दिया जाता है। ग्राहक जनवरी से दिसम्बर तक के लिए बनाए जाते हैं।

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

'संगीत' मासिक की पुरानी फाइलें

अब थोड़ी-सी बची हैं, शीघ्र मँगा लीजिए ! इनमें संगीत का खजाना भरा हुआ है ।

१६४४–विशेषांक (ग्रामोफोन संगीत अंक) सहित पूरी फाइल	मू० १०)
१६४६–विशेषांक (राष्ट्रीय संगीत अंक) सहित पूरी फाइल	मू० १०)
१६५०–विशेषांक (राग अंक) सहित पूरी फाइल	मू० १०)
१६५२–विशेषांक (आधुनिक संगीत अंक) सहित पूरी फाइल	मू० १०)
१६५६–विशेषांक (खमाज ठाठ अंक) सहित पूरी फाइल	मू० १०)
१६५७–विशेषांक (पूर्वी ठाठ अंक) सहित पूरी फाइल	मू० १०)
१६५८–विशेषांक (काफी ठाठ अंक) सहित पूरी फाइल	मू० १०)
१६५६–विशेषांक (मारवा ठाठ अंक) सहित पूरी फाइल	मू० १०)
१६६०–इस वर्ष के तीन विशेषांकों सहित पूरी फाइल	मू० १०)
१६६१–विशेषांक (आसावरी ठाठ अंक) सहित पूरी फाइल	मू० १०)
१६६२–विशेषांक (भैरवी ठाठ अंक) सहित पूरी फाइल	मू० १०)
१६६३–विशेषांक (कर्नाटक-संगीत अंक) सहित पूरी फाइल	मू० १०)
१६६४–विशेषांक (ध्रुपद-धमार अंक) सहित पूरी फाइल	मू० १०)
१६६५-विशेषांक (मृदंग अंक) सहित पूरी फाइल	मू० १०)
१६६६–विशेषांक (लोक-संगीत अंक) सहित पूरी फाइल	मू० १०)

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

फिल्म संगीत

[फिल्मी संगीत का सन् १९५९ से प्रकाशित प्रतिनिधि मासिक पत्र]

वार्षिक मूल्य १०)८५ Foreign Subs. Sh. 13/- $ 2.00

इसमें प्रायः निम्नलिखित सामग्री प्रकाशित होती है :—

* चित्रपट-संगीत (नवीन एवं लोकप्रिय फिल्मी गीत स्वरलिपि-सहित)
* संगीत-लहरी
* लोक-संगीत
* काव्य-संगीत
* भक्ति-संगीत
* खिलती कलियाँ
* सवाल-जवाब
* संगीत-रचयिताओं से भेंट
* पार्श्वगायकों से भेंट
* गीतकारों से भेंट
* संगीत-समर के सिपाही
* 'काका' की पैरोडी
* संगीत-मण्डप, इत्यादि।

इन स्तम्भों के अतिरिक्त फिल्मी गीतों, वाद्यों तथा नृत्यों आदि पर सचित्र लेख, संगीत-निर्देशक, गायक-गायिका, अभिनेत्री-नर्तकियों के आर्ट-पेपर पर छायाचित्र आदि भी दिए जाते हैं। ग्राहक जनवरी से दिसम्बर तक के लिए बनाए जाते हैं। एक प्रति का मूल्य १)

'फिल्म-संगीत' मासिक की पुरानी उपलब्ध फाइलें

इनमें फिल्मी गीतों, वाद्यों तथा नृत्यों आदि पर सचित्र लेख, फिल्मी संगीतकारों से भेंट, सुन्दर छायाचित्र, सरल संगीत तथा फिल्मी गीतों की स्वरलिपि आदि आकर्षक सामग्री दी हुई है :—

सन् १९५९ व १९६० के मिले-जुले १२ अंकों की फाइल	मू० १०)
सन् १९६३—(१२ अंकों की फाइल)	मू० १०)
सन् १९६४—(उपलब्ध ८ अंकों की फाइल)	मू० १०)
सन् १९६५—(१२ अंकों की फाइल)	मू० १०)
सन् १९६६—(१२ अंकों की फाइल)	मू० १०)

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

बाल संगीत-शिक्षा [लेखक—बी० एन० भट्ट]

प्रथम भाग :

यह अपर प्राइमरी सैक्शन (प्रारम्भिक कक्षाओं) के लिए है। इसमें अत्यन्त सरल भाषा में ताल और लय समझाई गई हैं तथा परक्शन बैण्ड, सिम्पल सौंग, कोरस गीत, भाव-गीत (Action-Songs) स्वरलिपि-सहित दिए हैं। इनके द्वारा ताल और लय-ज्ञान के साथ-साथ बच्चों की संगीत-ड्रिल भी हो जाती है। प्रत्येक पाठ के बाद अभ्यास के लिए प्रश्न दे दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या ४२, मूल्य ७५ पैसे।

दूसरा भाग :

यह लोअर मिडिल सैक्शन (पाँचवीं, छठी कक्षाओं) के लिए है। इसमें स्वर-साधन, स्वर, मेल, शुरू के तीन ठाठ, रागों के भेद, कुछ सरल तानें, हलके गाने, कोरस-गीत, लोक-गीत, राग भैरवी-सरगम (लक्षण-गीतों-सहित) तथा क्लास-आर्केस्ट्रा भी दिया गया है। पृष्ठ-संख्या ५२, मूल्य १)

तीसरा भाग :

यह अपर मिडिल सैक्शन (सातवीं-आठवीं कक्षाओं) के लिए है। इसमें स्वरलिपि द्वारा गायन निकालने और स्वरलिपि बनाने का तरीका; त्रिताल, झपताल और एकताल का पूर्ण विवरण; भैरव, भैरवी, बिलावल, खमाज, यमन, आसावरी, काफी तथा भीमपलासी—रागों के विवरण; सरगम-गीत, लक्षण-गीत व तान-आलाप थ्योरी-सहित दिए गए हैं तथा एक नक्शा रागों की थ्योरी समझाने वाला दिया गया है। पृष्ठ-संख्या ७६, मूल्य १)२५

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

संगीत किशोर [लेखक—जगदीशसहाय कुलश्रेष्ठ]

हाईस्कूल की ९–१० वीं कक्षाओं के लिए

इसमें १–बिलावल, २–खमाज, ३–यमन, ४–काफी, ५–आसावरी, ६–भैरव, ७–बिहाग, ८–देस, ९–भीमपलासी, १०–पीलू, ११–भूपाली, १२–वृन्द्रावनीसारंग, १३–भैरव, १४–बागेश्री—इन १४ रागों के सरगम, स्थायी, अन्तरा, आरोहावरोह-स्वरूप, पकड़, आलाप, स्वरलिपि-सहित गीत और तानें दी गई हैं तथा दादरा, कहरवा, तीव्रा, झपताल, एकताल, चौताल, त्रिताल, दीपचन्दी, जगपाल, भानुमती, शंखताल, आड़ाचौताल, गजझंपा, शिखरताल, मत्तताल प्रभृति तालों का पूर्ण उल्लेख है। पृष्ठ-संख्या ९०, मूल्य १)७५

संगीत-शास्त्र [लेखक—जगदीशसहाय कुलश्रेष्ठ]

इसमें इण्टरमीडियेट, हाईस्कूल, विदुषी, विद्याविनोदिनी और प्रवेशिका परीक्षाओं के लिए प्रॉस्पेक्टस के अनुसार संगीत की थ्योरी तथा दुर्गा, देस, तिलंग, भीमपलासी, वृन्दावनीसारंग, केदार, अल्हैया-बिलावल, खमाज, कल्याण, काफी, आसावरी, भैरव, भैरवी, भूपाली, बिहाग, बागेश्री, मालकौंस, पीलू, हमीर, सोहनी, जौनपुरी, तिलककामोद, श्री, कालिंगड़ा, पूर्वी, मारवा, तोड़ी, दरबारीकान्हड़ा, जयजयवन्ती, बहार, मुलतानी और बसन्त—इन ३२ रागों के आरोहावरोह-स्वरूप, पकड़ तथा शास्त्रोक्त वर्णन; गायक के १६ गुण तथा १६ अवगुण; त्रिताल, झपताल, चौताल, दादरा, रूपक, एकताल, तेवरा, धमार, कहरवा, तिलवाड़ा, झूमरा, दीपचन्दी, आड़ाचौताल तथा सूल—इन १४ तालों के ठेके व उनकी दुगुन; तानपूरा, सितार, वायलिन, दिलरुबा और वीणा के वादन तथा मिलाने का कायदा और वर्णन; शार्ङ्गदेव, भातखण्डे, विष्णुदिगम्बर, अमीर खुसरो, गोपाल नायक, स्वामी हरिदास

तथा तानसेन की जीवनियाँ; संगीत और काव्य एवं संगीत में साधना का महत्त्व आदि उपयोगी निबन्ध दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या ८६, मूल्य १)२५

हाईस्कूल संगीत-शास्त्र [लेखक भगवतशरण शर्मा]

यह पुस्तक हाईस्कूल तथा हायर सेकेण्ड्री-कोर्स के अनुसार लिखी गई है। इसमें संगीत, स्वर, श्रुतियाँ, शुद्ध स्वर, विकृत स्वर, सप्तक, आरोही, अवरोही, अलंकार रचने का क्रम, राग, वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, वर्जित, वक्र, पकड़, राग, जाति, स्वर-शृंगार, मींड़, सूत, घसीट, कण, जमजमा, मुरकी, क्रन्तन या गिटकिरी, झाला, आलाप, तान, जोड़, गीत, गत, तोड़ा, मेल और थाट, ताल, मात्रा, विभाग, सम, खाली, भरी, ठेका, लय, पेशकार, परन, टुकड़ा, तीया, रेला, सरगम, लक्षण-गीत, ध्रुपद, धमार, टप्पा, ठुमरी, तराना, भजन, भातखंडे तथा विष्णुदिगम्बर स्वरलिपि-पद्धति का परिचय, अप्रचलित तालों के ठेके, यमन, बिलावल, खमाज, भैरवी, आसावरी, काफी, भैरव, भूपाली, वृन्दावनीसारंग, देश, बिहाग, पीलू, बागेश्री तथा तिलककामोद रागों का शास्त्रीय विवरण और आलाप, ध्वनि-विज्ञान की आवश्यक जानकारी, भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास, शार्ङ्गदेव, अमीर खुसरो, गोपालनायक, स्वामी हरिदास, तानसेन, विष्णुदिगम्बर पलुस्कर तथा भातखण्डे की सचित्र जीवनी, वाद्यों के प्रकार, तबला, सितार, तानपूरा, बेला, पखावज या मृदंग, इसराज, बाँसुरी, वीणा, सरोद तथा सारंगी से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान एवं बजाने का तरीका और अन्त में हाईस्कूल-परीक्षा के गायन तथा वादन के सन् १९६२ से १९६५ तक के प्रश्न-पत्र दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या २१६, मूल्य २)

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति

क्रमिक पुस्तक मालिका

[लेखक—वि० ना० भातखंडे]

पहला भाग (हिन्दी) : इसमें शुद्ध तथा विकृत स्वरों को साधने के लिए १० पाठों में १०० से अधिक अलंकार तथा पल्टे दिए गए हैं और १० थाटों के १० आश्रय-रागों—यमन, बिलावल, खमाज, भैरव, पूर्वी, मारवा, काफी, आसावरी, भैरवी तथा तोड़ी की ३० सरल चीजें तथा सरगमें दी गई हैं। प्रारम्भ में शिक्षकों के लिए सूचना, स्वरलिपियों का चिह्न-परिचय तथा प्रारम्भिक तालों में दादरा, झपताल, एकताल और त्रिताल का स्पष्टीकरण दिया गया है। पृष्ठ-संख्या ६०, मूल्य १)२५

दूसरा भाग (हिन्दी) : इसमें शास्त्रीय-परिचय तथा रूपक, सूल, चौताल, आड़ाचौताल, झूमरा, धमार, दीपचन्दी, तिलवाड़ा तथा ब्रह्मताल का स्पष्टीकरण एवं क्रियात्मक पाठों में—यमन, यमनकल्याण, बिलावल, अल्हैया बिलावल, खमाज, भैरव, पूर्वी, मारवा, काफी, आसावरी, भैरवी तथा तोड़ी—इन १२ रागों का शास्त्रीय-परिचय तथा आलाप-सहित ११६ चीजों की स्वरलियाँ दी गई हैं। पृष्ठ-संख्या ३०६, सजिल्द मूल्य १०)

तीसरा भाग (हिन्दी) : इसमें शास्त्रीय परिचय एवं दादरा, तीव्रा, झपताल, सूलताल, चौताल, एकताल, आड़ाचौताल, झूमरा, धमार, दीपचन्दी, तिलबाड़ा और त्रिताल का स्पष्टीकरण तथा क्रियात्मक पाठों में भूपाली, हमीर, केदार, बिहाग, देस, तिलककामोद, कालिंगड़ा, श्री, सोहनी, बागेश्री, वृन्दावनीसारंग, भीमपलासी, पीलू, जौनपुरी और मालकौंस—इन १५ रागों के शास्त्रीय-परिचय व आलाप-सहित ५१२ चीजों की स्वरलिपियाँ दी गई हैं। पृष्ठ-संख्या ७९६, सजिल्द मूल्य १४)

चौथा भाग (हिन्दी) : इसमें शास्त्रीय-परिचय तथा क्रियात्मक पाठों में शुद्धकल्याण, कामोद, छायानट, गौड़सारंग, हिंडोल, शंकरा, देशकार, जयजयवन्ती, रामकली, पूरियाधनाश्री, वसन्त, परज, पूरिया, ललित, गौड़मल्लार, मियाँमल्लार, बहार, दरबारीकान्हड़ा, अडाणा और मुलतानी—इन २० रागों की ५३२ चीजों की स्वरलिपियों के अतिरिक्त रूपक, गजझम्पा, शिखर व मत्तताल इत्यादि का स्पष्टीकरण भी दिया गया है। इनका शस्त्रीय परिचय और आलाप भी दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या ८६६, सजिल्द मूल्य १४)

पाँचवाँ भाग (हिन्दी) : इसमें क्रियात्मक पाठों में चन्द्रकान्त, सावनीकल्याण, जैतकल्याण, श्यामकल्याण, मालश्री, हेमकल्याण, यमनीबिलावल, देवगिरीबिलावल, औडवदेवगिरी, सरपरदा, लच्छासाख, शुक्लबिलावल, ककुभ, नट, नटनारायण, नटबिलावल, नटबिहाग, कामोदनाट, बिहागड़ा, पटबिहाग, सावनी, मलूहाकेदार, जलधरकेदार, छाया, छायातिलक, गुणकली, पहाड़ी, माँड़, मेवाड़ा, पटमंजरी, हंसध्वनि, दीपक, झिंझोटी, खम्बावती, तिलंग, दुर्गा, रागेश्वरी, गारा, सोरठ, नारायणी, सावन, बंगालभैरव, आनन्दभैरव, सौराष्ट्रटंक, अहीरभैरव, प्रभात, ललितपंचम, मेघरंजनी, गुणकरी, जोगिया, देवरंजनी, विभास, झीलफ, गौरी, जंगूला, त्रिवेणी, श्रीटंक, मालवी, रेवा, जैतश्री, दीपक, हंसनारायणी तथा मनोहर आदि ७० रागों की २५१ चीजों की स्वरलिपियाँ रागों के शास्त्रोक्त विवरण-सहित दी गई हैं। इनके अतिरिक्त १८ तालों का स्पष्टीकरण तथा अन्य शास्त्रीय विवरण भी दिया गया है। पृष्ठ-संख्या ५४२, सजिल्द मूल्य १०)

छठा भाग (हिन्दी) : इसमें क्रियात्मक पाठों में पूर्व्या, पूर्वकल्याण, मालीगौरा, जैत, वराटी, विभास, पंचम, भटियार, भंखार, साजगिरी, ललितगौरी, सैंधवी, सिंध, बरवा, पंजाबी बरवा, धनाश्री, धानी,

प्रदीपकी, हंसकिंकिरणी, पलासी, मध्यममादिसारंग, शुद्धसारंग, बड़हंस-सारंग, सामन्तसारंग, मियाँ की सारंग, लंकदहनसारंग, पटमंजरी, सूहा, सुघराई, सूहासुघराई, शहाना, नायकीकान्हरा, देवसाख, कौशिककान्हरा, मेघमल्लार, सूरमल्लार, रामदासीमल्लार, नटमल्लार, मीराबाई की मल्लार, चरजू की मल्लार, चंचलससमल्लार, रूपमंजरीमल्लार, श्रीरंजनी, आभोग, चन्द्रकौंस, गौड़, मालगुंजी, देसी, कोमलदेसी, गान्धार, देवगान्धार, खट, खटतोड़ी, जंगला, भीलफ, गोपिकावसन्त, सिंधभैरवी, बिलासखानीतोड़ी, मोटकी, भूपालतोड़ी, उत्तरीगुणकली, वसन्तमुखारी, लाचारीतोड़ी, बहादुरीतोड़ी, अंजनीतोड़ी—इन ६८ रागों की १३७ चीजें स्वरलिपि, आलाप तथा शास्त्रीय विवरण सहित दी गई हैं। इसके अतिरिक्त १८ तालों का स्पष्टीकरण तथा अन्य शास्त्रीय विवरण भी दिया है। पृष्ठ-संख्या ५४८, सजिल्द मूल्य १०)

संगीत-विशारद [लेखक—वसन्त]

(Theory of Indian music from 1st. year to 4th. year)

इसमें सफल संगीतज्ञ बनने के उपकरण, संगीत में काकु, गायकों के घराने, पाश्चात्य स्वरलिपि-पद्धति, भारतीय संगीत का इतिहास, स्वतन्त्र भारत में संगीत तथा संगीत के इतिहास का काल-विभाजन नामक उपयोगी निबन्ध एवं नाद, स्वर, श्रुति, स्वर-स्थान और आन्दोलन-संख्या, श्रीनिवास तथा मंजरीकार के स्वर, थाट-व्याख्या, व्यंकटमखी के ३२ थाट, कर्णाटक के ७२ मेल, स्थान, सप्तक, वर्ण, अलंकार, राग, ग्राम, मूर्च्छना, राग के दस लक्षण, राग-भेद, आश्रय-राग, गान-समय-विभाजन, राग-वर्ग, संगीत के दिन-रात, अध्वदर्शक स्वर, हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति के ४० सिद्धान्त, वादी स्वर का महत्त्व, विवादी स्वर का प्रयोग, राग-रागिनी-पद्धति, गायकों के गुण-अवगुण, नायक, गायक, कलावन्त, गंधर्व, पंडित, संगीत-शास्त्रकार, संगीत-शिक्षक, कव्वाल, अताई, कथक तथा वाग्गेयकार, गीत, गंधर्व गान,

मार्ग तथा देशी संगीत, ग्रह-अंश और न्यास, ध्रुवपद की चार वाणियाँ, खयाल, टप्पा, ठुमरी, तराना, त्रिवट, होरी, धमार, गजल, कव्वाली, दादरा, सादरा, खमसा, लावनी, चतुरंग, सरगम, राग-माला, लक्षण-गीत, भजन, गीत, कीर्तन तथा लोकगीतों के प्रकार, संगीतात्मक रचनाओं के नियम, स्वर-स्थान, रूपकालाप, आलप्ति, आविर्भाव, तिरोभाव, स्थाय, मुखचालन, आक्षिप्तिका, निबद्ध व अनिबद्ध गान, विदारी, अल्पत्व, बहुत्व, पकड़, मींड, सूत, आन्दोलन, गमक, कण, तानों के प्रकार, आलाप, बढ़त, अन्तरा, संचारी, आभोग, गमक के प्रकार, रागों का दस विभागों में वर्गीकरण करने का प्राचीन सिद्धान्त, आदत, जिगर, हिसाब, स्वरलिपि-पद्धति, विष्णुदिगम्बर तथा भातखंडे स्वरलिपि के चिह्न, संगीत और रस, ताल, मात्रा, ठेका, लयों के प्रकार, आवृत्ति, जरब, कायदा, टुकड़ा, पल्लू, चौपल्ली, पल्टा, तीया, मुखड़ा, मोहरा, लग्गी, पेशकार, आमद, बोल, उठान, नवहक्का, रेला, परन, ताल के दस प्राण, काल, क्रिया, कला, मार्ग, अंग, प्रस्तार, जाति, ग्रह, दक्षिण की ताल-पद्धति, उत्तर-भारतीय ३७ तालों के ठेके तथा विवरण, प्रथम वर्ष से पंचम वर्ष तक के ६० रागों का शास्त्रीय वर्णन, सितार, तबला, बाँसुरी, मृदंग, तानपूरा, बायलिन तथा इसराज का ऐतिहासिक वर्णन, मिलाने तथा बजाने का ढंग और उनके अंगों का वर्णन, वादकों के गुण-दोष इत्यादि विषयों का स्पष्टीकरण तथा अन्त में जयदेव, शार्ङ्गदेव, अमीरखुसरो, गोपाल नायक, स्वामी हरिदास, तानसेन, बैजू बावरा, सदारंग, अदारंग, बालकृष्ण बुवा इचलकरंजीकर, रामकृष्ण बझेबुवा, अब्दुलकरीम खाँ, इनायत खाँ, भातखंडे तथा विष्णुदिगम्बर जैसे संगीतकारों के जीवन-चरित्र और अकारादि-क्रम से २०० प्रचलित तथा अप्रचलित रागों का शास्त्रीय विवरण दिया गया है। पृष्ठ-संख्या ३१६, सजिल्द मूल्य ६) डाक-व्यय पृथक्

संगीत-सागर [सम्पादक—प्रभूलाल गर्ग]

इसके अबतक ७ संस्करण हो चुके हैं।

स्वर, श्रुति, ग्राम, मूर्च्छना, पल्टा, अलंकार, ठाठ-व्याख्या, वर्ण, ५०४० स्वर-प्रस्तार, राग-रागिनी, राग-परिवार, ४८४ राग-रागिनियों के आरोहावरोह, रागों के भेद, शास्त्रीय चीजों के नोटेशन, सरल गीतों के नोटेशन, ताल-व्याख्या, लय-विवरण, टुकड़ा, परन, तिहाई, ठेका, मोहरा, लग्गी, प्रचलित तालें, गूढ़ तालें, गुम तालें, सितार, बाँसुरी, जलतरंग, दिलरुबा, बेला, बीन, बैंजो इत्यादि साजों को बजाने की सचित्र विधि, नाच के तोड़े, बोल, नृत्य-कला के भाव चित्र और बोल-सरगम देखकर आप प्रसन्न हो जाएँगे। गायन, वादन और नृत्य की मुख्य पुस्तक। पृष्ठ-संख्या ३०२, सजिल्द मूल्य ७)

सितार-मालिका

[प्रस्तावना—पं० रविशंकर, लेखक—भगवतशरण शर्मा]

सितार का इतिहास, विभिन्न अंग, जवारी खोलना, परदे बाँधना, मिजराब बनाना, सितार मिलाने का प्राचीन व आधुनिक ढंग, अति-मन्द्र सप्तक में बजाना, बैठक, अँगुलियों का संचालन, मिजराब जल्दी चलने का गुप्त रहस्य, वादन में मिठास उत्पन्न करना, गतों के घराने और उनकी विशेषताएँ, लाग-डाट, मन्द्र पंचम से मध्य सप्तक के गान्धार तक की मीड़ उत्पन्न करना, अनुलोम-विलोम, कृन्तन, जमजमा, मुर्की, गिटकिरी, कण, झाले बनाना, आलाप, भराव, स्वर-गुंजन, विभिन्न प्रकार की मीड़, गमक, तानों की तैयारी का उपाय, वाहवाही लेना, तानें बनाने का ढंग, १०० तानों का उदाहरण, विभिन्न तालों में गतों का निर्माण करना, द्रुतगत के १२ प्रकार, गत आड़ी-तिरछी करने की युक्ति, सुमेरुखंडी तानें, विभिन्न तीए बनाने की विधि,

चक्रदार, फर्माइशी चक्रदार, कमाली चक्रदार, पाँच 'धा' की कमाली चक्रदार, महफिल और सितार-वादन, १२ स्वरों का एकसाथ साधन, सितार में ठुमरी-अंग, नित्य का अभ्यास, कठिन लयों का अभ्यास, आड़ी, बिआड़ी, पौनी, महाकुआड़ी, महाआड़ी और महाबिआड़ी लयों को बजाने की सरल युक्ति, तीनताल में विभिन्न तालें प्रदर्शित करना, अन्य तालों में तिहाई बजाने की युक्ति, उस्तादों की कुछ गुप्त बातें, प्राचीन तथा आधुनिक सितार-वादकों के जीवन-चरित्र, रियाज का ढंग, जुगलबन्दी में बजाने का रहस्य; इन सबके अतिरिक्त लगभग ७० रागों के आलाप, परिचय तथा गतें दी गई हैं।

प्रत्येक पद्धति का विद्यार्थी और कलाकार-वर्ग इस पुस्तक से लाभ उठा सकता है। पृष्ठ-संख्या २६६, मूल्य ६)

ताल अंक जनवरी १६४० का 'संगीत' विशेषांक

इसमें ताल और उसकी विशेषता, तबले के अंगों का सचित्र वर्णन, तबले के अक्षरों का निकास एवं अभ्यास-विधि, प्रचलित बोल, तिहाइयाँ और चक्रदार बनाना; कर्नाटक-ताल-पद्धति, सोलो तबला-वादन, विभिन्न तालों में अभ्यास के लिए बोल, टुकड़े, तिहाई, रेला तथा परन; पखावज के बोल और परन, मृदंग और तबला में लय-प्रस्तार, ताल-माला, शिव-परन, ताल-यन्त्र, तबले के विभिन्न बाज, तबला-तरंग बजाने की विधि, लय के प्रकार, उस्तादों के बोल, तबला-सम्बन्धी सभी पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या, १०० से अधिक प्राचीन शास्त्रीय तथा गुप्त तालों के ठेके एवं 'रत्नाकर' की १२१ तालों का विवरण दिया गया है। साथ ही भारत के प्रख्यात तबला-वादकों एवं पखावजियों की ताल-सम्बन्धी रचनाएँ और महत्त्वपूर्ण लेख भी दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या २०२, सजिल्द मूल्य ५) डाक-व्यय पृथक्

नृत्य अंक जनवरी १९४१ का 'संगीत' विशेषांक

इसमें प्राचीन हिन्दू-नृत्य, कथक नृत्य का इतिहास, नृत्य के भाव, तत्कार, लखनऊ-घराने के बोल और परन, तांडव व लास्य नृत्य की परनें, देश-विदेश के नृत्य, नृत्य-कला और शिक्षा-केन्द्र, मणिपुरी रास-नृत्य की कहानी, पाश्चात्य नृत्य-कला, झपताल में नृत्य के बोल व तिहाई, प्राचीन हस्त-मुद्राएँ, रुक्मणी अरुण्डेल की नृत्य-कला, नृत्य की पोशाक और मेकअप, वैदिक नृत्यों की नामावली, बाली द्वीप के नृत्य-नाटक, गरबा-नृत्य, भारतीय नृत्य में बैले और भावाभिव्यक्ति, नाच के कुछ लहरे व गीत, कुंज-बन में रास-नृत्य, भारतीय नृत्य में मुद्रा का सांकेतिक अर्थ, उत्साह-नृत्य, नृत्य की संगति के लिए त्रिताल का पूरा बाज, नृत्य-गौरव, एकांकी नाटक, पश्चिम के नग्न नृत्य, स्टेज और रौशनी, शम्भू महाराज के बोल तथा कथक नृत्य के आचार्य श्री बिन्दादीन महाराज इत्यादि एवं प्रारम्भ में एक तिरंगा और यत्र-तत्र अनेक हाफ-टोन व रेखा-चित्र दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या २१०, मूल्य ३)५०

सितार-शिक्षा

इसमें सितार का इतिहास और प्रारम्भिक शिक्षण, तार मिलाना, थाट बदलना, वीणा और सितार के झाले व ठोक, मिजराब के बोल, सितार-वादन का वैज्ञानिक ढंग, सरगम निकालना, सितार-सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या, मिजराब बनाने का सचित्र ढंग, यमन, भैरवी, काफी, पीलू, खमाज, कालिंगड़ा, हिंडोल, जौनपुरी इत्यादि ठाठों के लिए मिलाए हुए सितार के चित्र, खूँटियों में तार बाँधने का नक्शा, सितार की बैठक, भारत के बड़े घरानों की सितारकारी और तालीम, संगीत-वाद्ययन्त्र-नियमन, सरोद-शिक्षा, संगीत-विशारद के राग तथा उनका शास्त्रीय-विवरण; भीमपलासी, पूर्वी, यमन, ललित, शंकरा, दुर्गा, जोगिया, भूपाली, बहार, हिंडोल, बिहाग, बागेश्री,

भैरवी, गुणकली, भैरव, पूरिया, सोहनी, वृन्दावनीसारंग, चन्द्रकौंस, पीलू, कीरवाणी, धानी, मियाँमल्लार, आनन्दी, वैरागी, कोमल ऋषभ की आसवरी, गौड़सारंग, देश, मालकंस, सुघराई, श्यामकल्याण, यमनकल्याण, अल्हैयाबिलावल और शिवरंजनी—इन रागों में प्रसिद्ध घरानों और उस्तादों की गतें तोड़ों-सहित दी गई हैं। अधिकांश गतों के साथ आलाप, राग-परिचय तथा झाले इत्यादि भी दिए हैं। पृष्ठ-संख्या १५८, मूल्य ४)

ठुमरी अंक जनवरी-फरवरी १९४७ का 'संगीत' विशेषांक

इसमें प्रो० नारायणराव व्यास, मनहर बरवे, ओंकारनाथ ठाकुर, अब्दुलकरीम खाँ, हीराबाई बड़ोदेकर, बड़े गुलामअली खाँ, रोशनआरा बेगम, मुहम्मद खाँ, शमशीर हैदराबादी, के० एल० सहगल, गौहरजान एवं रसूलनबाई बनारसी की ठुमरियाँ स्वरलिपि-सहित दी गई हैं। पृष्ठ-संख्या १५६, मूल्य ३)

सन्त संगीत अंक जनवरी १९४८ का 'संगीत' विशेषांक

तुलसी, सूर, कबीर, रैदास, नानक, शाहंशाह, ब्रह्मानन्द, मीरां और सहजोबाई के पद तथा जुथिकाराय और मीरां के भजन स्वर-लिपियों-सहित दिए गए हैं। इसमें ६२ पद स्वरलिपियों-सहित और ४० पद बिना स्वरलिपि के हैं, पृष्ठ-संख्या १६०, मूल्य ३)५०

राष्ट्रीय संगीत अंक सन् १९४९ का 'संगीत' विशेषांक

इसमें चुने हुए राष्ट्रीय गीत, वन्दे मातरम्, रामधुन, झंडा-प्रार्थना, 'बापू की अमर कहानी', 'ऐ मेरे वतन के लोगो' तथा फिल्मों में गाए हुए अनेक राष्ट्रीय गीत, स्वरलिपियों सहित दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या १६४, मूल्य ३)५०

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

राग अंक सन् १९५० का 'संगीत' विशेषांक

इसमें पूर्वकल्याण, तिलककामोद, कालिंगड़ा, श्री, चन्द्रकौंस, बहार, बागेश्री, अड़ाना, धानी, छायातिलक, कौशीतोड़ी, द्वादशीभैरवी, वराटी, गुर्जरीतोड़ी, हंसध्वनि, शिवमतभैरव, पंचकल्याण, खोकर, बागेश्री, बाँसकान्हड़ा, भैरवबहार, नटबिहाग, कोकिलपंचम, गोरकल्याण, गौड़बिलावल, मधुवन्ती, गोरखकल्याण, छायानट, ललितकली, नन्द, नायिकीकान्हड़ा, शुद्धनट, पीलू, मारूबिहाग, देवगांधार, पटदीप, बंगालभैरव, सैंधवी, मालकस, मालव, नटबिलावल और शुक्लबिलावल रागों में तराना, खयाल, ध्रुवपद, सितार-गत तथा अन्य बंदिशें दी गई हैं। इसके अतिरिक्त राग द्वारा रोग-निवृत्ति इत्यादि विभिन्न उपयोगी लेख तथा ताल-सम्बन्धी सामग्री और अभिनव रागमंजरी के १२२ रागों की व्याख्या दीगई है। हनुमन्मत के अनुसार राग-रागिनियों का एक चार्ट भी दिया गया है। प्रारम्भ में आर्ट-पेपर पर राग-समय-चक्र तथा रागिनी सिन्धवी का तिरंगा चित्र दिया गया है। पृष्ठ-संख्या १७६, मूल्य ४)

वाद्य-संगीत अंक सन् १९५१ का 'संगीत' विशेषांक

इसमें हारमोनियम, तबला, बेला, बाँसुरी, सितार, सारंगी, इसराज, क्लॉरनेट, प्यानो, जलतरंग, मुँहचंग, बुलबुलतरंग इत्यादि वाद्यों को बजाने की सचित्र शिक्षा दी गई है; साथ ही बहुत-सी गतों की स्वरलिपियाँ दी गई हैं। पृष्ठ-संख्या १७६, मूल्य ३)५०

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

बिलावल थाट अंक सन् १९५३ का 'संगीत' विशेषांक

इसमें शुद्धबिलावल, अल्हैयाबिलावल, शुक्लबिलावल, यमनीबिलावल, देवगिरिबिलावल, नटबिलावल, हेमकल्याण, सरपर्दा, लच्छासाख, ककुभ, नट, बिहागड़ा, मलुहाकेदार, जलधरकेदार, दुर्गा, गुणकली, पहाड़ी, माँड, मेवाड़ा, पटमंजरी, हंसध्वनि, दीपक, आसा, कमलरंजनी, चंद्रिका, चक्रधर, जयराज, देशकार, पटबिहाग, नटबिहाग, बिहाग, भवानी, रसरंजनी, रसचंद्र, लाजवंती, शंकरा, सावनीकल्याण, भिन्नषड्ज, चित्तमोहनी और जनरंजनी—बिलावल थाट के इन ४० रागों का शास्त्रीय परिचय, बंदिशें, सितार-गतें एवं ताल त्रिताल का विस्तृत बाज दिया गया है। बिलावल थाट से सम्बद्ध कई महत्त्वपूर्ण लेख भी दिए हैं। पृष्ठ-संख्या १७२, मूल्य ३)

कल्याण थाट अंक सन् १९५४ का 'संगीत' विशेषांक

इसमें यमन, यमनकल्याण, शुद्धकल्याण, श्यामकल्याण, जयतकल्याण, राजकल्याण, लक्ष्मीकल्याण, श्रीकल्याण, दुर्गाकल्याण, गौड़सारंग, हमीर, कामोद, विरंचमुखी, केदार, भूपाली, छायानट, मालश्री, मारूबिहाग (मार्गविहाग), हिण्डोल, साँझ का हिण्डोल, नन्द (आनन्दी या आनन्दकल्याण), मालारानी, वैजयन्ती और चन्द्रकान्त—कल्याण थाट के इन २४ रागों का शास्त्रीय परिचय, बन्दिशें, सितार-गतें एवं झपताल का विस्तृत बाज दिया गया है। प्रारम्भ में कल्याण थाट से सम्बद्ध कई महत्त्वपूर्ण लेख भी दिए हैं। पृष्ठ-संख्या १७६, मू० ३)

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

भैरव थाट अंक सन् १९५५ का 'संगीत' विशेषांक

इसमें भैरव, अहीरभैरव, आनन्दभैरव, बंगालभैरव, शिवमतभैरव, कौंसीभैरव, नटभैरव, प्रभातभैरव, कालिंगड़ा, रामकली, विभास, जोगिया, ललितकली, क्षनिका, हेविज्ञी, सावेरी, मेघरंजनी, ललितपंचम, गुणकरी, वैरागी, गौरी, भीलफ, प्रभावती, देवरंजनी, अरज, कमलमनोहरी, गिरिजा, सौराष्ट्रटंक, हिजाज, जंगूला, देशगौड़ और अहीरललित—भैरव थाट के इन ३२ रागों का शास्त्रीय परिचय, खयाल, ध्रुपद, तराने, सितार-गतें तथा चौताल का विस्तृत बाज दिया गया है। प्रारम्भ में भैरव थाट-सम्बन्धी कई महत्त्वपूर्ण लेख दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या १८०, मूल्य ३)

खमाज थाट अंक सन् १९५६ का 'संगीत' विशेषांक

इसमें खमाज, तिलककामोद, देस, जयजयवन्ती, दुर्गा, नारायणी, नागस्वरावली, श्यामकेदार, सरस्वती, साजन, सोरठ, गारा, झिंझोटी, खम्बावती, रागेश्वरी, हंसश्री, कलावती, खोकर, गोरखकल्याण, चम्पक, तिलंग, नाटकुरंजिका, कामाइ, करंकवराली, नूपुर, रविकोश, कान्तलवराली, काम्बोजी, लंकेश्री, बंगेश्री, होमशिखा और माधुरी—खमाज थाट के इन ३२ रागों का शास्त्रीय परिचय, बन्दिशें, सितार-गत तथा धमार ताल का पूरा बाज दिया गया है। प्रारम्भ में खमाज थाट से सम्बन्धित ऐतिहासिक महत्त्व का एक लेख भी दिया गया है। पृष्ठ-संख्या १७२, मूल्य ३)

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

पूर्वी थाट अंक सन् १९५७ का 'संगीत' विशेषांक

इसमें पूर्वी, श्री, गौरी, परज, वसन्त, पूरियाधनाश्री, जयतश्री, त्रिवेणी, टंकी (श्रीटंक), रेवा, दीपक, पुष्परंजनी, यशरंजनी, कुसुमरंजनी, गौरांजनी, मनोहर, मालवी, ललितागौरी, ललितमंगल, लतिका, मंजरी और परजबहार—पूर्वी थाट के इन २२ रागों का शास्त्रीय परिचय, बंदिशें, सितार-गत तथा एकताल का विस्तृत बाज दिया गया है। प्रारम्भ में खमाज थाट से सम्बन्धित उच्चकोटि के लेख भी दिए हैं। पृष्ठ-संख्या १७२, मूल्य ३)

काफी थाट अंक सन् १९५८ का 'संगीत' विशेषांक

इसमें काफी, मेघमल्लार, रामदासीमल्लार, सूरमल्लार, गौड़मल्लार, मियाँमल्लार, मीरामल्लार, नटमल्लार, आभोगीकान्हरा, धनाश्री, धानी, चन्द्रकौंस, देशाख्य, नायिकीकान्हरा, पटमंजरी, प्रदीपकी (पटदीपकी), बरवा, बड़हंससारंग, मध्यमादिसारंग, शुद्धसारंग, मियाँ की सारंग, सामन्तसारंग, वृन्दावनीसारंग, पीलू, बहार, भीमपलासी, श्रीरंजनी, बागेश्री, शहाना, रेवती (कान्हरा), सूहा (कान्हरा), हंसकिंकणी, हंसमंजरी, नीलाम्बरी, शिवरंजनी, राजेश्वरी, मालगूंजी, सैंधवी (सिंदूरा), सुघराई, दौलती, रागरंजनी, मधुरंजनी, पुष्प, जयकंस, भीम, सरस्वतीरंजनी, रक्तहंस, अहीरी, सावन, गोपकाम्बोजी, कोहल, मधुकंस, जयन्त, कोलहास, विजय, मनोहर और मानवी—काफी थाट के इन ५८ रागों का शास्त्रीय परिचय, खयाल, ध्रुपद, तराने, सितार-गत तथा दीपचन्दी ताल का विस्तृत बाज दिया गया है। प्रारम्भ में आचार्य शार्ङ्गदेव की श्रुतिस्वर-व्यवस्था से सम्बन्धित आचार्य बृहस्पति का एक खोजपूर्ण निबन्ध तथा काफी थाट से सम्बन्धित अन्य कई महत्त्वपूर्ण लेख दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या १७२, मू० ३) डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस [उ० प्र०]

भैरवी थाट अंक सन् १९६२ का 'संगीत' विशेषांक

इसमें भैरवी, मालकौंस, बिलासखानीतोड़ी, मालव, सिंहरव, भूपालतोड़ी, उत्तरी गुणकली, आभावती, शुद्धसावन्त, बैरागन, चन्द्रमाला, रामकलीतोड़ी, बसन्तमुखारी, भोपाल और मोटकी— भैरवी थाट के इन १५ रागों का शास्त्रीय परिचय, बन्दिशें, सितार-गतें तथा झूमरा ताल का विस्तृत बाज दिया गया है। प्रारम्भ में भैरवी थाट से सम्बद्ध कई महत्त्वपूर्ण लेख भी दिए हैं। पृष्ठ-संख्या १६२, मूल्य ३)

कर्नाटक-संगीत अंक सन् १९६३ का 'संगीत विशेषांक

इसमें कर्नाटक-संगीत के विविध पहलुओं पर शिक्षात्मक ढंग से प्रकाश डाला गया है। वस्तुतः यह पन्द्रह अध्यायों में पूर्ण, कर्नाटक-संगीत का एक अद्वितीय ग्रन्थ ही बन गया है। इसमें संगीतोत्पत्ति, 'नाद' शब्द की व्युत्पत्ति, नादोत्पत्ति और नाद-व्यवहार, श्रुति, स्वर, द्वादश स्वर-स्थान, षोडश स्वर-संयोग, प्रकृति तथा विकृति स्वर, सप्तक, मूर्च्छना, भरत व शार्ङ्गदेव की ग्राम-व्यवस्था, गमक, प्रस्तार, स्वर-संख्या की दृष्टि से रागों के सात भेद, मेलकर्त्ता, ताल और उसके दस प्राण—काल, मार्ग, क्रिया, अंग, ग्रह, जाति, कला, लय, यति तथा प्रस्तार; स्वरलेखन-पद्धति, निबद्ध संगीत, अलंकार, स्वरजति, गीतम्, प्रबन्ध, वर्णम्, कीर्तनम्, जावलि, रागमालिका, कल्पना-संगीत इत्यादि विषय-सामग्री सरल भाषा में सविस्तार दी गई है। अन्त में कर्नाटक-संगीत के १००१ रागों का संक्षिप्त विवरण भी दिया गया है। पृष्ठ-संख्या २००, मूल्य ४)

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

ध्रुपद-धमार अंक सन् १९६४ का 'संगीत' विशेषांक

इसमें ध्रुपद-शैली : एक विचार, ध्रुवपद-गायकों और ध्रुवपदकारों के आश्रयदाता, वाग्गेयकारों की परम्परा और ध्रुवपद के विषयों का स्रोत, भरतकालीन ध्रुवा-गायन आदि महत्त्वपूर्ण लेख तथा अनेकों प्रचलित-अप्रचलित रागों व तालों में निबद्ध पचास से अधिक ध्रुपद (जिनमें प्राचीन ध्रुपदियों की रचनाएँ भी सम्मिलित हैं), धमार एवं ताल धमार (चौदह मात्राओं में अट्ठाईस ताल-परन), चारताल के परनों में श्रीराम-कथा, गणेश-परन, चौसठ 'धा' की परन (कमाली चक्रदार) इत्यादि के अतिरिक्त मानसिंह तोमर, हरिदास स्वामी, तानसेन, दिरंग खाँ, बहराम खाँ, बैजू बावरा, अल्लाबन्दे खाँ, चन्दनजी चौबे तथा गोपाललाल आदि प्राचीन सुप्रसिद्ध ध्रुपदियों के जीवन-चरित्र भी दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या १६८, मूल्य ४)

मृदंग अंक सन् १९६५ का 'संगीत' विशेषांक

इसमें अनेक विद्वानों के मृदंग-सम्बन्धी खोजपूर्ण लेख व बारह, चौदह, अट्ठाईस, दस, सोलह, सात, नौ, ग्यारह, तेरह, पन्द्रह, सत्तरह, अठारह, उन्नीस, इक्कीस, तेईस, पच्चीस, सत्ताईस, उन्तीस, छह, चार एवं अन्य मात्राओं में लगभग ११० तालें, परन आदि दी हुई हैं। ताल-सम्बन्धी कुछ प्राचीन परिभाषाओं का स्पष्टीकरण, हस्तसाधन-विधि, भारत के अनेक मृदंग-रत्नों का सचित्र संक्षिप्त जीवन-परिचय आदि काफी महत्त्वपूर्ण सामग्री इसमें मिलेगी, जो अन्यत्र दुर्लभ है। पृष्ठ-संख्या २२४, मूल्य ४)

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

लोक-संगीत अंक सन् १९६६ का 'संगीत' विशेषांक

इसमें राजस्थान, बिहार, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, केरल, उत्तर-प्रदेश, पंजाब, कश्मीर, हिमाचल-प्रदेश, गोआ, मणिपुर, उड़ीसा, बंगाल, असम आदि प्रान्तों के लगभग १५० लोकगीत एवं लोकधुनें स्वरलिपि-सहित दी गई हैं। लोक-संगीत पर अनेक विद्वानों के लगभग २० खोजपूर्ण लेखों से इस ग्रन्थ का महत्त्व और भी बढ़ गया है। पृष्ठ-संख्या २२४, मूल्य ४)

ग़ज़ल अंक सन् १९६७ का 'संगीत' विशेषांक

इसमें भारतीय साहित्य तथा संगीत में ग़ज़ल, ग़ज़ल: एक विवेचन, ग़ज़ल: एक परिपूर्ण शैली, ग़ज़ल: प्रेम की अभिव्यक्ति का माध्यम, ग़ज़ल और उसकी बहरें आदि महत्त्वपूर्ण लेख; ग़ज़ल-गायन के साथ प्रयुक्त होनेवाली तालों के ठेके, प्रकार, उठान, गतें, रेले, लग्गियाँ, लड़ियाँ, मुखड़े, तिहाइयाँ आदि तथा ८० से अधिक चुनी हुई ग़ज़लें स्वरलिपि-सहित दी गई हैं, जो अन्यत्र दुर्लभ हैं। पृष्ठ-संख्या १७०, मू० ४)

हरिदास अंक फरवरी, १९५९ का 'संगीत' विशेषांक

स्वामी हरिदासजी का संगीत-पक्ष, हरिदास और तानसेन, भारतीय संगीत को स्वामी हरिदास की देन, स्वामी हरिदास और हरिदास डागुर, स्वामी हरिदास का उद्भव-काल तथा कुल-निर्णय, भारतीय संगीत में भक्तों का स्थान, अष्टदश-सिद्धान्त के पद, स्वामी हरिदास-रचित केलिमाल के ५० पद, तानसेन की समाधि से सम्बन्धित नए तथ्य इत्यादि महत्त्वपूर्ण सचित्र लेख तथा स्वामीजी के कुछ ध्रुपदों की स्वरलिपियाँ दी गई हैं। पृष्ठ-संख्या ९८, मूल्य १)२५

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

कथक नृत्य

(राज्य-सरकार द्वारा पुरस्कृत)

लेखक—लक्ष्मीनारायण गर्ग] [प्रस्तावना-लेखक—शम्भू महाराज

इसमें कथक नृत्य का इतिहास, विभिन्न घराने, कथक नृत्य के प्राचीन कलाकार, कथक नृत्य की विशेषताएँ, आमद, परण, अदा, थाट, हस्तक, सलामी, कवित्त, पढ़न्त, निकास, अंग, प्रस्तार, उरमई, सुलप, उरप, तिरप, लाग, डाट आदि नृत्य-सम्बन्धी समस्त पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या, रस और भाव, लास्य और ताण्डव, शम्भू महाराज के भाव और गतें, नायक-नायिका-भेद, ठुमरी, रास-नृत्य और उसके कवित्त, वेष-भूषा, शारीरिक सौन्दर्य के लिए विविध प्रयोग, घुँघरुओं पर अधिकार पद-संचालन और लयकारी के अभ्यास, अंगहार, पाद-विक्षेप, भृकुटि-नेत्र-दर्शन तथा छाती आदि के संचालन, अंग तथा उपांगों के भेद, मुद्रा और गति, मुख-बोलों का अभ्यास, तत्कार के प्रकार, कथक-शिक्षा के सचित्र उपयोगी पाठ; जयपुर, बनारस तथा लखनऊ घराने की परनें, कुदऊसिंह घराने की बन्दिशें, भिन्न-भिन्न मात्राओं की तालों के लिए बोल तथा परनें, रास-नृत्य, जाति-परन, पक्षी-परन, रहसखानी बोल, इन्द्र-धनुष, कृष्ण-लास्य, शिव-श्लोक, विभिन्न स्तुतियां, राधिका-लास्य, शिव-ताण्डव, मदन-दहन, द्रौपदी-रक्षण तथा लंक-विजय आदि १५० से अधिक परनें, त्रिमलू के तोड़े, पैर, हस्तक, प्राचीन शास्त्रीय नृत्यों का वर्णन, मुरलीमनोहर नृत्य, नृत्य के लिए लहरे, नृत्य के कुछ रहस्य, नर्तक-नर्तकी तथा नृत्याचार्य के गुण आदि का विस्तृत एवं खोजपूर्ण वर्णन किया गया है। आर्ट-पेपर पर यथास्थान अनेक चित्र दिए गए हैं और मुख-पृष्ठ पर तिरंगा चित्र है। चित्र-संख्या २००, पृष्ठ-संख्या २५२, सजिल्द मू० ८), डाक-व्यय पृथक्

कथकलि नृत्यकला

लेखक—अविनाशचन्द्र पाण्डेय] [प्रस्तावना-लेखक—राजनर्तक गोपीनाथ

यह केरल की प्राचीन लोक-नृत्यनाट्य-कला आज शास्त्रीय कथकलि नृत्य के रूप में समस्त भारत में विद्यमान है। कलात्मक साज-सज्जा, रूप-रंग तथा सांकेतिक भावाभिनय की दृष्टि से यह नृत्य-शैली बेजोड़ है। इस पुस्तक में कथकलि नृत्य की व्युत्पत्ति, नर्तन-शैली, भाव-भंगिमाओं का स्पष्टीकरण, हस्त-मुद्राएँ, सौन्दर्य-प्रधान भाव, पोशाक व शृङ्गार, कथकलि की तालें, रंगमंच-सम्बन्धी विवरण, ट्रावनकोर के वाद्य-यन्त्र एवं कथकलि-नृत्याभ्यास को सचित्र रूप से व्यक्त किया गया है। अन्त में कथकलि और भरतनाट्यम् की ५५ भाव-मुद्राओं के बड़े-बड़े रेखा-चित्र दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या १५२, सजिल्द मूल्य ३)

नृत्य-भारती [लेखक—आचार्य सुधाकर]

विशुद्ध भारतीय नृत्यकला पर क्रियात्मक शिक्षा देनेवाली यह एक ही पुस्तक है। इसमें भरत के नाट्यशास्त्र के आधार पर रेखा-चित्रों के माध्यम से नृत्य के उपयोगी पाठ दिए गए हैं; साथ ही शास्त्रीय नृत्यों के प्रकार, रंगशाला, अंगचारी, मण्डल, हस्त-मुद्राएँ, १०८ करण, अंगहार, शरीर साधने के व्यायाम, लय-साधन, विभिन्न रस तथा अभ्यास के लिए नृत्य के टुकड़े इत्यादि विद्यार्थियों के स्तर से प्रश्नोत्तर-शैली में बड़े सरल और मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किए गए हैं। पृष्ठ-संख्या १२२, चित्र-संख्या २८१, सजिल्द मूल्य ४)

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

भारत के लोक-नृत्य [लेखक—लक्ष्मीनारायण गर्ग]

इसमें जम्मू तथा कश्मीर, हिमाचल-प्रदेश, सिक्किम, मणिपुर-असम, नागा-प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तर-प्रदेश, बंगाल, उड़ीसा, बिहार, मध्यप्रदेश, केरल, मद्रास, आन्ध्र, मैसूर तथा अण्डमन-निकोबार के दो सौ से अधिक लोक-नृत्यों का वर्णन दिया गया है।

आर्टपेपर पर १०० हाफटोन-चित्र, २१ रेखाचित्र तथा लोक-नृत्यों से सम्बन्धित भारत का सचित्र नक्शा और आकर्षक दुरंगा मुख पृष्ठ। पृष्ठ-संख्या १३६, मूल्य ५)

गान्धर्व संगीत-प्रवेशिका [लेखक—देवकीनन्दन धवन]

प्रस्तुत पुस्तक अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय-मण्डल, बम्बई द्वारा आयोजित 'प्रवेशिका' परीक्षा के पाठ्यक्रम पर पूर्ण रूप से आधारित है। प्रथम तथा द्वितीय वर्ष के परीक्षार्थी इससे पूरा-पूरा लाभ उठा सकें, इसका विशेष ध्यान रखा गया है। क्रियात्मक (Practical) तथा लिखित (Theory) परीक्षाओं के लिए पुस्तक में दो-दो खण्ड प्रथम व द्वितीय वर्ष के लिए पृथक्-पृथक् हैं। प्रारम्भ में, दो भागों में संगीत-शास्त्र (Theory) दे दिया गया है; तत्पश्चात् दो खण्डों में—विष्णुदिगम्बर-स्वरलिपि-चिह्न-परिचय, तालों के ठेके, दस सरल अलंकार, दस कठिन अलंकार; भूपाली, दुर्गा, देस, खमाज, भीमपलासी, सारंग, काफी, बागेश्री, भैरव, तिलककामोद, यमन, पटदीप, हमीर, भैरवी, बिहाग तथा आसावरी रागों के शास्त्रीय विवरण व आलाप, स्वर-मालिका, लक्षण-गीत, ध्रुपद, धमार एवं तराना इत्यादि दिए गए हैं। गीतों की भाषा सरल है। अन्त में 'वन्दे मातरम्' (राग मिश्रकाफी) और 'जय जगदीश हरे'

(राग बिहारी) की स्वरलिपियाँ भी दे दी गई हैं। पृष्ठ-संख्या १६२, मूल्य ३)५०

रवीन्द्र-संगीत [प्रस्तुतकर्ता—राधेश्याम पुरोहित]

कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर के २५ गीतों का हिन्दी-रूपान्तर करके स्वरलिपि-सहित प्रकाशित करने का यह प्रथम प्रयास है। बन्दिशों में रवीन्द्र-संगीत की मूल शैली का निर्वाह पूर्ण रूप से करते हुए गीतों के हिन्दी-पद्यानुवाद में कविवर टैगोर के भावों को सुरक्षित रखने का पूर्ण प्रयास किया गया है।

कुछ गीतों की शीर्ष-पंक्तियाँ संक्षेप में इस प्रकार हैं :—

अरी बधू सुन्दरी, अरे आओ रे, उस आसन-तले, ओ भुवन-मनमोहिनी, झरे-झरे-झरे रंग, ध्वनित आह्वान, बादल बाउल बजा रहा रे, वायु बहे जोर-जोर, प्रखर तपन ताप से, ओ रे गृहवासी, बादल-धारा चली गई, मेरी मुक्ति आलोक में रे। पृष्ठ-संख्या १२०, मूल्य ३)

संगीत-सीकर (इण्टर म्यू० परीक्षा के प्रश्नोत्तर)

[लेखक—बी० एन० भट्ट तथा हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव]

भातखण्डे यूनिवर्सिटी ऑफ म्यूजिक, लखनऊ तथा माधव संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर के थर्डईअर (इण्टरमीडियेट) परीक्षाओं के प्रश्न, उत्तर सहित एक जिल्द में प्रकाशित हो गए हैं। इनसे संगीत के विद्यार्थियों को परीक्षा देने में बहुत ही सहूलियत हो जाएगी। प्रत्येक प्रश्न को गहराई तक समझाकर पूरे-पूरे उत्तर लिखे गए हैं। पृष्ठ-संख्या २६२, सजिल्द मूल्य ६)। डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

सूर-संगीत (भाग १ व २)

[सम्पादक—लक्ष्मीनारायण गर्ग]

प्रत्येक भाग में 'सूरसागर' के ६०-६० पदों की स्वरलिपियाँ मनोहर और आधुनिक भजन-शैली में दी गई हैं। प्रत्येक कविता के साथ उसका सरल भावार्थ भी दिया गया है।

प्रथम भाग, पृष्ठ-संख्या ९६, मूल्य २); दूसरा भाग, पृष्ठ-संख्या १०४, मूल्य २)

फिल्म-संगीत

इनमें फिल्मी गाने स्वरलिपियों सहित दिए गए हैं। इस समय कुछ प्रतियाँ ही स्टॉक में हैं। भाग ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १५, १८, १९, मूल्य २) प्रति भाग तथा भाग २२, २४, २७, मूल्य ४) प्रति भाग। शेष भाग अप्राप्य हैं। सन् १९५९ से मासिक पत्र के रूप में निकल रहा है।

सिने-संगीत (भाग १) [सम्पादक—लक्ष्मीनारायण गर्ग]

इसमें कंगन, दुनिया झुकती है, अनाड़ी, छोटी बहन, रानी रूपमती, बेदर्द जमाना, घर-घर की बात, नवरंग, सावन, दिल देके देखो, फागुन, आशा, कवि कालिदास, मिनिस्टर, गृहलक्ष्मी, दीप जलता रहे, अर्द्धांगिनी, गोपीचन्द, दिल भी तेरा हम भी तेरे, ससुराल, चौदहवीं का चाँद, मुगले-आजम, बरसात की रात इत्यादि फिल्मों के ५० लोकप्रिय गीतों की स्वरलिपियाँ दी गई हैं। स्वरलिपियाँ अत्यन्त सरल ढंग से दी गई हैं, ताकि संगीत का साधारण ज्ञान रखनेवाला व्यक्ति किसी भी वाद्य पर आसानी से उन्हें निकाल सके और फिल्मी गीतों का आनन्द ले सके। पृष्ठ-संख्या १५४, मूल्य ४) डाक-व्यय पृथक्

गिटार-मास्टर [लेखक—चिन्तामणि जैन]

पाठकों के अनुरोध पर, यह गिटार बजाने की शिक्षा देनेवाला हिन्दी में सर्वप्रथम ग्रन्थ अब प्रकाशित हो गया है। इसमें गिटार के अंगों का सचित्र वर्णन, बजाने का तरीका, स्वर-ज्ञान एवं कॉर्ड बजाने से सम्बन्धित विवरण के साथ ही क्लासीकल धुनें, नृत्य-धुनें, पाश्चात्य और फिल्मी धुनें, राष्ट्रीय धुनें तथा गान्धीजी की प्रिय रामधुन आदि की स्वरलिपियाँ दी गई हैं। पृष्ठ-संख्या १००, मूल्य २)

मारिफुन्नगमात (हिन्दी)

[लेखक—राजा नवाबअली : अनुवादक—डा० विश्वम्भरनाथ भट्ट]

पहला भाग :

इसमें नाद और स्वर की अवस्थाएँ, स्वर और श्रुति, आरोही, अवरोही, ग्राम, मूर्च्छना, थाट, तान, अलंकार, सरगम—इन सब पर बड़े वैज्ञानिक और सरल ढंग से विवेचन प्रस्तुत किया गया है। दस थाटों के १५२ रागों के शास्त्रोक्त परिचय, लक्षण-गीत तथा अन्य बन्दिशें दी गई हैं। अन्त में तालाध्याय के अन्तर्गत लय, मात्रा, ताल के दस प्राण, 'संगीतरत्नाकर' के १२१ ताल, 'संगीत-मकरन्द' तथा अन्य प्राचीन ग्रन्थों के ताल, प्रचलित ताल, ताल के ग्रह, प्रस्तार और नियम विस्तृत रूप में दिए गए हैं। भूमिका के २७ पृष्ठों में ऐतिहासिक ढंग से संगीत-सम्बन्धी अत्यन्त उपयोगी चर्चा की गई है। पृष्ठ-संख्या ३८०, सजिल्द मूल्य ७)

दूसरा भाग :

इसमें शुद्धकल्याण, यमन, भूपाली, हेमकल्याण, हिंडोल, मालश्री, छायानट, कामोद, केदार, हमीर, भवसाख, जैत, शुद्धबिलावल, अल्हैया, शुक्लबिलावल, नटबिलावल, ककुभ, लच्छासाख, देवगिरी, देशकार, बिभास, नट, बिहाग, शंकराभरण, दुर्गा, गुनकली, खमाज, झिझोटी,

तिलंग, जयजयवन्ती, रागेश्वरी, खम्भावती, देस, सोरठ, भैरव, बंगाल-भैरव, कोमलभैरव, अहीरभैरव, आनन्दभैरव, शिवमतभैरव, जोगिया, रामकली, कोमलरामकली, खट, भंखार, ललित, ललितागौरी, पूर्वा, जयतश्री, पूरियाधनाश्री, श्री, तिरवन, बसन्त, परज, पंचम, मालीगौरा, पूरिया, सोहनी, बरारी, साजगिरी, रूपमंजरी, शुद्धमल्लार, मियाँ की मल्लार, चरजू की मल्लार, मीराबाई की मल्लार, देसमल्लार, मेघ, शुद्धसारंग, मधमादसारंग, वृन्दावनीसारंग, मियाँ की सारंग, सावन्त-सारंग, दरबारीकान्हड़ा, बागेश्वरी, सूहा, सुघराई, अड़ाना, सिंदूरा, नायिकीकान्हड़ा, खमाजीकान्हड़ा, शहाना, मुद्रिककान्हड़ा, धनाश्री, धानी, काफी, पीलू, देवसाख, पटमंजरी, मुलतानी, टोड़ी, गूजरीटोड़ी, लक्ष्मीटोड़ी, बहादुरीटोड़ी, बिलासखानीटोड़ी, लाचारीटोड़ी, आसावरी, देसी, कोमलदेसी, गान्धारी, आभीरी, भैरवी, कौंसी, मालकोंस, भीलफ और गारा—इन १०५ रागों में प्राचीन उस्तादों के २२३ ध्रुपद, धमार और होरी दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या ३०४, सजिल्द मूल्य ७)

तीसरा भाग :

इसमें भोपाली, कामोद, हमीर, जयतकल्याण, अल्हैया, शुक्ल-बिलावल, देवगिरी, देशकार, बिहाग, बिहागड़ा, शंकरा, खमाज, झिंझोटी, जयजयवन्ती, देस, भैरव, रामकली, खट, ललित, ललितागौरी, पूर्वी, पूरियाधनाश्री, वसन्त, ललितपंचम, मालीगौरा, पूरिया, सूरदासी-मल्लार, मधमादसारंग, वृन्दावनी, बड़हंससारंग, गौड़सारंग, भीमपलासी, बागेश्री, शहाना, पीलू, मुलतानी तथा मालकौंस—इन ३७ रागों में प्राचीन उस्तादों के ५८ ध्रुपद, धमार और होरी दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या ८०, मूल्य १)५०

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

सहगल-संगीत [सम्पादक—लक्ष्मीनारायण गर्ग]

इसमें बाबुल मोरा नैहर छूटो जाय, करूँ क्या आस निरास भई, अब मैं कहा करूँ कित जाऊँ, बीन के झूठे पड़ गए तार, दीवाना हूँ, निसदिन बरसत नैन हमारे, मधुकर श्याम हमारे चोर, मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो, बिना पंख पंछी हूँ मैं, सप्त सुरन तीन ग्राम, ऐ कातिबे-तकदीर, गम दिए मुस्तकिल, जब दिल ही टूट गया, चाह बरबाद करेगी हमें मालूम न था, टूट गए सब सपने, लग गई चोट करेजवा में, ऐ दिले-बेकरार झूम, दो नैना मतवारे इत्यादि स्वर्गीय के० एल० सहगल के ४५ दर्द-भरे गीत, गजल और भजन इसमें स्वरलिपि-सहित दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या १३८, मूल्य ३)

बेला विज्ञान [VIOLIN GUIDE]

[लेखक—बेनीप्रसाद श्रीवास्तव 'भाई']

इसमें संगीत-शास्त्र के पारिभाषिक शब्दों की संक्षिप्त व्याख्या, प्रचलित ११ तालों का स्पष्टीकरण तथा ताल और वाद्य-सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या, बेला पकड़ना, गज का प्रयोग, अँगुलियों का प्रयोग, बेला के तार और उनका मिलाना, ब्रिज लगाना, फिंगर-बोर्ड पर स्वरों का स्थान, अभ्यास करने का तरीका, आवाज बनाना, हस्त-साधन तथा कलाई की हरकत सचित्र रूप से समझाई गई है तथा बिलावल, यमन, खमाज, भैरव, काफी, आसावरी, भूपाली, बिहाग, देस, भीमपलासी, बागेश्वरी, सारंग तथा पीलू—इन चौदह रागों में साठ गतें, आलाप, जोड़, तोड़े और झाले दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या २३६, सजिल्द मूल्य ५)

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

अप्रकाशित राग [लेखक—ज० दे० पत्की]

पहला भाग : इसमें मारूबिहाग, वैजयन्ती, श्यामकल्याण, रसचन्द्र, नन्द, लाजवन्ती, चन्द्रिका, रसरंजनी, भवानी, नागस्वरावली, रेवा, गौरांजनी, दीपक, मालिन, भटियार, धन्यधैवत, जोग, आभोगी, रेवती, शिवरंजनी, शोभावरी तथा चन्द्रकौंस—इन २२ रागों का शास्त्रीय परिचय, स्वर-विस्तार, लक्षण-गीत तथा खयाल इत्यादि ७३ रचनाएँ दी गई हैं। पृष्ठ-संख्या १७६, मूल्य २)

दूसरा भाग : इसमें मालारानी, लक्ष्मीकल्याण, मलूहा, देवगिरि, चक्रधर, हंसध्वनि, जयराज, चम्पक, खोकर, खम्माजीभटियार, नाटकुरंजिका, हंसश्री, गोरख, सरस्वती, श्यामकेदार, नीलांबरी, मालगुंजी, हंसकिंकिणी, पटमंजरी, हंसमंजरी, शिवराज और मधुवन्ती—इन २२ रागों का शास्त्रीय परिचय, स्वर-विस्तार, लक्षण-गीत तथा खयाल इत्यादि ६० रचनाएँ दी गई हैं। पृष्ठ-संख्या ६४, मूल्य २)

तीसरा भाग : इसमें श्रीकल्याण, साँझ का हिण्डोल, हेमकल्याण, भिन्नषड्ज, कमलरंजनी, कलावती, नारायणी, साजन, पद्मावती, चम्पाकली, शहाना, जयन्तमल्लार, मधुरंजनी, राजेश्वरी, मालीगौरा, गुणकली अहीरभैरव, अरज, गोपीवसन्त, बिलासखानी, कोकिलपंचम और सागर—इन २२ रागों का शास्त्रीय परिचय, स्वर-विस्तार, लक्षण-गीत तथा खयाल इत्यादि ७६ रचनाएँ दी गई हैं। पृष्ठ-संख्या ११४, मूल्य २)

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

संगीत अर्चना (तान-आलाप)

[लेखक—बी० एन० भट्ट]

(क्रमिक पुस्तक भाग ३ की गायकी)

इसमें थर्डईअर या इण्टरमीडिएट परीक्षा में आने वाले १५ रागों—भूपाली, हमीर, केदार, बिहाग, देस, तिलककामोद, कालिंगड़ा, श्री, सोहनी, बागेश्री, वृन्दावनीसारंग, भीमपलासी, पीलू, जौनपुरी और मालकोश—का विवरण; स्वरविस्तार, आलाप, बोल-तानें, दुगुन, चौगुन, आड़ की दुगुन, आड़ की चौगुन इत्यादि पूरी-पूरी गायकी ताल-स्वर-सहित दी गई है। पृष्ठ-संख्या २७०, सजिल्द मूल्य ६)

संगीत-कादम्बिनी (तान-आलाप)

[लेखक—बी० एन० भट्ट]

(क्रमिक पुस्तक भाग ४ की गायकी)

यह संगीत-विशारद के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त लाभदायक पुस्तक है। इसमें शुद्धकल्याण, कामोद, छायानट, गौड़सारंग, हिंडोल, शंकरा, देशकार, जैजैवन्ती, रामकली, पूरियाधनाश्री, बसन्त, परज, पूरिया, ललित, गौड़मल्लार, मियाँमल्लार, दरबारीकान्हड़ा, अड़ाना और मुलतानी—इन रागों की पूर्ण व्याख्या अत्यन्त विस्तृत रूप से दी गई है तथा इन रागों के आलाप, तान, ध्रुपद, धमार, आड़ की दुगुन, आड़ की चौगुन भी दी गई हैं। पृष्ठ-संख्या २९८, सजिल्द मू० ६)

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

स्वरमालिका [लेखक—विष्णुनारायण भातखण्डे]

आचार्य भातखण्डे ने पुराने उस्तादों की खिदमत करके गुप्त सरगमों को स्वर-बद्ध करके 'गायन-उत्तेजक मण्डल' के माध्यम से उन्हें गुजराती भाषा में प्रकाशित कराया था, इस पुस्तक में जो अब हिन्दी भाषा में उपलब्ध है—अड़ाना, आसावरी, काफी, कामोद, कालिंगड़ा, ककुभ, केदार, खमाज, गूजरी, गुणक्री, गौड़सारंग, गौड़मल्लार, छायानट, जैजैवन्ती, जोगिया, जौनपुरी, झिंझोटी, तिलककामोद, तिलंग, तोड़ी, दरबारी, देवगांधार, देशकार, देस, देसी, धनाश्री, धानी, परज, पूर्वी, पूरिया, बागेसरी, बहार, बिलावल, बिहाग, बिंदरावनी, भटियार, भीमपलासी, भूपाली, भैरव, भैरवी, माँड, मारवा, मालकंस, मालश्री, मुलतानी, यमन, रामकली, रेवा, ललित, वसन्त, विभास, शुक्लबिलावल, शुद्धकल्याण, श्री, शंकरा, सारंग, सिंदूरा, सूहा, सोरठ, सोहनी, हमीर और हिण्डोल—इन ६२ रागों की १२३ सरगमें भिन्न-भिन्न तालों में दी गई हैं। पृष्ठ-संख्या १३०, मूल्य २)५०

संगीत के कुछ प्राचीन ग्रन्थ

संगीत पारिजात (पं० अहोबल) हिन्दी टीका सहित, पृष्ठ १९६, मू० ५)

संगीत दर्पण (पं० दामोदर) हिन्दी टीका सहित, पृष्ठ १२०, मू० २)५०

स्वरमेलकलानिधि (रामामात्य) हिन्दी टीका सहित, पृष्ठ ५२, मू० १)२५

दत्तिलम् (दत्तिल मुनि) हिन्दी टीका सहित, पृष्ठ ७०, मू० २)५०

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय हाथरस (उ० प्र०)

भातखंडे संगीत-शास्त्र [लेखक—वि० ना० भातखंडे]

आचार्य भातखंडे ने संगीत की थ्योरी पर मराठी भाषा में प्रश्नोत्तर शैली से 'हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति' नामक चार भागों में जो महान् ग्रन्थ लिखा था, यह उसका ही हिन्दी-अनुवाद है।

पहला भाग :

इसमें स्वर, सप्तक, आरोह, अवरोह, थाट, राग-जाति, छह राग-छत्तीस रागिनियाँ, दस थाट, वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी का प्रयोग, मार्गी व देशी संगीत, दाक्षिणात्य स्वर-नाम, ग्रह, न्यास, आलाप, स्थायी, अन्तरा, पूर्वांग-उत्तरांग, गायन-प्रकार, गायन-गुणदोष, तान, राग-समय, आश्रय-राग, गायन-शैली, ध्रुपद, खयाल, टप्पा, ठुमरी, गमक, जीव-स्वर, अंश-स्वर, प्राचीन आलाप-पद्धति, राग-गायन-समय, श्रुति, अलंकार, बंगाल-प्रान्त के संगीत-ग्रन्थ-लेखक, रागों का ध्यान, संगीत के उपलब्ध ग्रन्थ, 'चन्द्रोदय' के १९ थाट व उनके स्वर, दक्षिण के पद्धति-ग्रन्थ, रागांग, भाषांग, क्रियांग, उपांग, मध्यकालीन शास्त्रकार, सामवेद के प्रश्न, कैप्टेन डे के विचार, पाश्चात्य संगीत, नारदोक्त राग-रागिनियों की पूर्ण विवेचना की गई है।

इसके अतिरिक्त यमन, भूपाली, चन्द्रकान्त, मालश्री, हिंडोल, हमीर, केदार, कामोद, छायानट, श्याम, गौड़सारंग, बिलावल, देवगिरी, यमनी, देशकार, बिहाग, बिहागड़ा, शंकरा, ककुभ, सरपर्दा, नट, शुक्लबिलावल, लच्छासाख, मलुहाकेदार, हेमकल्याण, दुर्गा, हंसध्वनि, गुणकली, पहाड़ी, माँड़, झिंझोटी, खमाज, तिलंग, रागेश्वरी, खम्भावती, नारायणी, नागस्वरावली, प्रतापवराली, सोरठ, देश, तिलककामोद, जयजयवन्ती, गौड़मल्लार, मल्लार के भेद, गारा तथा बड़हंस रागों की विस्तृत व्याख्या है। पृष्ठ-संख्या २६८, सजिल्द मू० ६)

दूसरा भाग :

इसमें श्रुति, स्वर, मूर्च्छना, ग्राम, संस्कृत-ग्रन्थकार—रामामात्य, सोमनाथ, पार्श्वदेव, टागोर, पुण्डरीक विट्ठल, अहोबल, लोचन और व्यंकटमखी आदि विद्वानों की श्रुति-स्वर-व्यवस्था तथा इनकी स्वर-तुलना, यूरोप के संगीत-विद्वानों के स्वरान्तर, पर्शियन संगीत, नायक और तन्तकार, लोक-संगीत आदि महत्त्वपूर्ण विषयों की पूर्ण विवेचना करते हुए—भैरव, रामकली, गुणक्री, जोगिया, सावेरी, मेघरंजनी, प्रभात, देशगौड़, कालिंगड़ा, बंगालभैरव, विभास, शिवमतभैरव, अहीरभैरव, सौराष्ट्रटंक, हिजाज, आनन्दभैरव रागों की थ्योरी पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है। पृष्ठ-संख्या ३६२, सजिल्द मूल्य ७)

तीसरा भाग :

इसमें प्राचीन संगीत-ग्रन्थ, रे ध, ग नि स्वरों का महत्त्व, सन्धि-प्रकाश-मेल-प्रवेशक राग, संगीत की योग्यता, संगीत-कला का श्रेष्ठत्व, राग-विस्तार के नियम, आलाप-प्रधान रागों के नाम, विभिन्न रागों की तुलना, रागों के देवतामय रूप, स्वरों के रंग, सोमनाथ की स्वर-लिपि, वादी-संवादी स्वरों में श्रुत्यन्तर लगाने के नियम, व्यंकटमखी के ७२ मेल तथा उनके उपांग आदि राग, राजा साहब टागोर का ग्राम-सम्बन्धी स्पष्टीकरण, संगीत की देव-परम्परा, दाक्षिणात्य मेलों का रचना-चातुर्य, अरबी व पर्शियन संगीत-ग्रन्थों में संस्कृत-ग्रन्थाधार, रत्नाकर का शुद्ध थाट, नग़माते-आसफी ग्रन्थ की राग-रचना, तौफेतुल-हिन्द ग्रन्थ में कल्लिनाथ, सोमेश्वर तथा भरत-मत की राग-रागिनियाँ, आसफी ग्रन्थ के स्वर, संगीत के जीवभूत स्वर व सायं-प्रातर्गेयत्व, राधागोविन्द-संगीतसार ग्रन्थ का परिचय, क्षेमकर्ण की रागमाला, संगीतसार का राग-वर्गीकरण, सरमाएइशरत ग्रन्थ की राग-रचना, सायंगेय व प्रातर्गेय तानों का स्वरूप, दीपक राग के अद्भुत चमत्कार व ग्रन्थ-मत, संगीतपारिजात ग्रन्थ का काल, रागों को सुनकर श्रोताओं

पर होनेवाले परिणाम, हाथों पर गाना कैसे लाया जाता है, मन्द्र-सप्तक में खुलनेवाले राग गाते समय तम्बूरा कैसे मिलाएँ, तानसेन के गुरु-भाइयों के नाम व परिचय, मिस्टर बनर्जी, कैप्टिन विलर्ड तथा अन्य ग्रन्थकारों के राग-सम्बन्धी मत, संगीत-कला के शास्त्रीय ज्ञान के प्रसारार्थ स्थापित होनेवाली संस्था और उसके उद्देश्य।

इसके अतिरिक्त यमनकल्याण, कालिंगड़ा, पूर्वी, श्री, भैरव, गौरी, रेवा, मालवी, त्रिवेणी, टंकी, पूरियाधनाश्री, पूर्वी, जैतश्री, दीपक, परज, वसन्त, विभास, मारवा, पूरिया, पूर्वकल्याण, पूर्व्या, जैतकल्याण, मालीगौरा, वराटी, साजगिरी, सोहनी, ललित, पंचम, ललितपंचम, भंखार, भटियार—इन रागों का ग्रन्थोक्त परिचय, सरगम, परस्पर तुलना, थाट-वर्गीकरण तथा स्वर-विस्तार दिए गए हैं। इन रागों की व्याख्या के अतिरिक्त भातखंडेजी ने अपने संगीत-भ्रमण में प्राप्त हुए बहुत-से अनुभव भी दिए हैं। पृष्ठ-संख्या ३४०, सजिल्द मूल्य ७)

चौथा भाग :

इसमें गायन-समयानुसार हिन्दुस्तानी रागों का वर्गीकरण, राग व रस, भरत व शार्ङ्गदेव की श्रुतियाँ, व्यंकटमखी का मेल-प्रस्तार, अहोबल व श्रीनिवास के शुद्ध मेल, मूर्च्छना, हिन्दुस्तानी राग-पद्धति के नियम, गीत-रचना, अन्तरमार्ग का स्पष्टीकरण, इसरारे-करामत ग्रन्थ, मआदनुलमोसीक़ी-वर्णित प्रसिद्ध गायकों-वादकों के घराने व इतिहास, मध्यकालीन नायक, प्राचीन खयालिए टप्पा-गायक, अकबरी दरबार के प्रसिद्ध गायक, वाणी, रामपुर के वजीर खाँ बीनकार का घराना, राजा मान तथा 'मानकुतूहल', कश्मीर-लायब्रेरी में 'राग-दर्पण', रागदर्पण-वर्णित तानसेन के परवर्ती कलाकार, तानसेन के बाद के गायक-वादक, लखनऊ के नवाब शुजाउद्दौला के समकालीन गायक-

वादक, धाड़ी नाम का पूर्व इतिहास, प्रसिद्ध कव्वाल व कलावन्त, प्रसिद्ध तन्तकार, प्रसिद्ध सितारिए, प्रसिद्ध सारंगिए, प्रसिद्ध नक्कारची व पखावजी, प्रसिद्ध कत्थक व तबलिए, महाराष्ट्र-संगीत व उसका उद्धार, 'स्थाय' शब्द पर चर्चा, नोटेशन व उसके उपयोग की मर्यादा, समप्राकृतिक रागों में उच्चार का महत्त्व, जयदेव और विद्यापति का समय, जयदेव के प्रबन्ध-सम्बन्धी रागों के स्वर-स्वरूप, वजीर खाँ द्वारा गाए हुए गान्धारी के गीत व उनकी सरगमें, 'नादोदधि' ग्रन्थ का सार, सोमनाथ द्वारा बताए पर्शियन राग।

इसके अतिरिक्त अडाणा, अहीरीतोड़ी, आसातोड़ी, आसावरी, अंजनीतोड़ी, काफी, काफीतोड़ी, कौंसीकान्हड़ा, खट, गांधारी, गौड़-मल्लार, चरजू की मल्लार, चंचलसस की मल्लार, छायातोड़ी, जुझाहुली, जौनपुरी, जौनपुरीतोड़ी, झीलफ, गांधारीतोड़ी, गुर्जरीतोड़ी, दरबारी-कान्हड़ा, देवगांधार, देवरंजनी, देवसाख, तोड़ी, धनाश्री, धानी, धुंडियामल्लार, नटमल्लार, नायिकीकान्हड़ा, नूरसारंग, पटमंजरी, पलासी, पीलू, प्रदीपकी, बहादुरीतोड़ी, बहार, बंगालबिलावल, बिलास-खानीतोड़ी, वृन्दावनी, भीम, भीमपलासी, भूपाल, भैरवी, मधमाद-सारंग, मार्गतोड़ी, मालकोष, मीराबाई की मल्लार, मियाँ की मल्लार, मियाँ की सारंग, मुलतानी, मेघमल्लार, रामदासीमल्लार, रूपमंजरी, लंकदहनसारंग, लाचारीतोड़ी, लक्ष्मीतोड़ी, वरालीतोड़ी, वागीश्वरी, शुद्धतोड़ी, शुद्धमल्लार, शुद्धसारंग, सामन्तसारंग, शहाना, सिन्धुरा, सिन्ध, सिन्धभैरवी, सुघराई, सूहा, सूरमल्लार, सैंधवी, हंसकिंकिणी—इन रागों के ग्रन्थोक्त परिचय, सरगम, परस्पर तुलना, थाट-वर्गीकरण तथा स्वर-विस्तार दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या ७६०, सजिल्द मूल्य १६)

डाक-व्यय पृथक्

ठुमरी-गायकी [रचयिता—तुलसीराम देवांगन]

इसमें विभिन्न रागों में निबद्ध ४५ ठुमरी-गीत, दादरा, कजरी, चैती इत्यादि स्वरलिपि-सहित दिए गए हैं। प्रत्येक गीत के बोल सरस तथा बन्दिश कलापूर्ण है। पृष्ठ-संख्या १३४, मूल्य ३)५०

आवाज़ सुरीली कैसे करें ?

[लेखक—लक्ष्मीनारायण गर्ग]

स्वर को मधुर बनाने के लिए यह अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। इसमें यौगिक, आयुर्वेदिक, ऐलोपैथिक, होम्योपैथिक, बायोकैमिक, प्राकृतिक, यूनानी, मनोवैज्ञानिक तथा तांत्रिक प्रयोग दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त स्वर का महत्त्व, स्वरयन्त्र, श्वास-नियन्त्रण, नाद-साधन, स्वराभ्यास, टान्सिल्स और स्वर, स्वर-रक्षा के उपाय, संगीत-प्रदर्शन की तैयारी, कण्ठ-गुण, ध्वनि के प्रकार, मुखपेशियों की कार्य-प्रणाली और उनके व्यायाम, नासिका-यन्त्र तथा स्वर के प्रकार इत्यादि विषयों पर विस्तार से लिखा गया है, जो वर्षों के अनुसन्धान तथा इन विषयों से सम्बन्धित लगभग ८० भारतीय और पाश्चात्य ग्रन्थों के अध्ययन का परिणाम है। नेत्र-विहीनों के लिए भारत-सरकार ने इस पुस्तक को ब्रेल-लिपि में भी प्रकाशित किया है। पृष्ठ-संख्या १९८, सजिल्द मूल्य ३)५०

उत्तर-भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास

लेखक—विष्णुनारायण भातखंडे] [अनु०—अरुणकुमार सेन

'ए शॉर्ट हिस्टोरीकल सर्वे ऑव दी म्यूजिक ऑव अपर इण्डिया' नामक अँग्रेजी-पुस्तक का यह हिन्दी-अनुवाद है। आचार्य भातखण्डे ने संगीत के इतिहास पर विहंगम दृष्टि डालकर सार-रूप में इसे प्रस्तुत किया है। भरत, जयदेव, लोचन कवि, अमीरखुसरो, गोपाल नायक,

शार्ङ्गदेव, रामामात्य, सोमनाथ, व्यंकटमखी, दत्तिल, कोहल, भावभट्ट, स्वामी हरिदास, तानसेन, पुण्डरीक, विट्ठल, दामोदर, अहोबल, सदारंग, अदारंग, मोहम्मद रजा, महाराजा प्रतापसिंह देव, सौरीन्द्रमोहन टैगोर, कृष्णानन्द व्यास और कृष्णधन मुखोपाध्याय की संगीत-सम्बन्धी रचनाओं और कार्यों पर समीक्षात्मक रूप के मार्मिक विवेचन करते हुए सर विलियम जोन्स, कैप्टिन विलर्ड, कर्नल पी० टी० फ्रेंच तथा स्टेनली लेनपूल इत्यादि योरोपीय प्राच्य पण्डितों के संगीत-सम्बन्धी विचारों का संकलन भी प्रस्तुत किया गया है। सन् १९१६ में आयोजित प्रथम ऑल-इण्डिया-म्यूजिक-कान्फ्रेंस, बड़ौदा में भातखण्डेजी द्वारा दिए हुए भाषणों का यह एक महत्त्वपूर्ण संकलन है। पृष्ठ-संख्या ६४, सजिल्द मूल्य २)५०

संगीत-पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन

लेखक—विष्णुनारायण भातखण्डे] [अनु०—भगवतशरण शर्मा

यह आचार्य भातखण्डे द्वारा लिखित 'ए कम्परेटिव स्टडी ऑव सम ऑव दी लीडिंग म्यूजिक सिस्टम ऑव दी फिफ्टीन्थ, सिक्सटीन्थ, सेविनटीन्थ एण्ड एट्टीन्थ सेन्चुअरीज' का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें १५ से १८ वीं शताब्दी तक की प्रमुख संगीत-परम्पराओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिसके अन्तर्गत रागतरंगिणी हृदय-कौतुक, हृदयप्रकाश, संगीतपारिजात, रागतत्त्वविबोध, सद्राग-चन्द्रोदय, रागमाला, रागमंजरी, रसकौमुदी, अनूप संगीत-रत्नाकर, अनूप संगीत-विलास, अनूप संगीतांकुश, स्वरमेलकलानिधि, रागविबोध, चतुर्दण्डिप्रकाशिका, संगीतसारामृत तथा रागलक्षणम् इन १७ ग्रन्थों का सार प्रस्तुत किया गया है। पृष्ठ-संख्या १२४, मूल्य ३)

डाक-व्यय पृथक्

'संगीत' रजत जयन्ती अंक

[सम्पादक—लक्ष्मीनारायण गर्ग]

संगीत-महिमा, गान्धर्व वेदोद्धृतसार ग्रन्थ, नाद और उसका स्वरूप, 'बृहद्देशी' के कुछ निर्णायक स्थल, भारतीय संगीत की आधारभूत विशेषताएँ, नाट्य और गान्धर्व, थाट-उपथाट पद्धति, स्वर-मार्जन की प्राचीन विधि, भारतीय नृत्यों की धार्मिक परम्परा, भारतीय संगीत का रूप, संगीत और शिक्षा, संगीत के प्राचीन शास्त्रकार, आइने-अकबरी में संगीत-चर्चा, मन्दिरों के संगीत-सम्प्रदाय, मआदनुलमौसीक़ी में संगीत-चर्चा, ओमापतम् ग्रन्थ का नृत्याध्याय इत्यादि महत्त्वपूर्ण लेखों के अतिरिक्त संगीत कार्यालय, हाथरस के विराट् संगीत-ग्रन्थागार में सुरक्षित दो हजार संगीत-ग्रन्थों की सूची भी दी गई है। पृष्ठ-संख्या २००, पँचरंगा कवर, मूल्य ५)

मृदंग-तबला-प्रभाकर [लेखक—भगवानदास शर्मा]

पहला भाग :

इस पुस्तक में ताल-सम्बन्धी थ्योरी, महत्त्वपूर्ण परनें, टुकड़े, मोहरे, मुखड़े, लग्गी, गाँस, ताँत, पेशकार, गुम्मद, फुलझड़ी, बल, अजराड़ा, देहली, लखनऊ, बनारसी तथा अवधी बाज के मृदंग-तबला सीखने के बोल दिए गए हैं। इसमें चक्करदार परनें, सर्पाकारी कायदा, नवहक्का, त्रिपल्ली आदि घरानेदार ऐसी चीजें, जिन्हें बड़े-बड़े उस्ताद अपने पास धरोहर के रूप में छिपाकर रखते हैं, भी दी गई हैं। पृष्ठ-संख्या १२४, मूल्य २)५०

दूसरा भाग :

इस पुस्तक में ९-११-१३-१५-१७-१८-१९-२१ मात्राओं की अप्रचलित तालें, मुखड़े-टुकड़े-मोहरे एवं परन-सहित दी गई हैं।

गंगाधर-परन, लीला-परन, लंकदहन-परन, सरस्वती-परन, गणेश-परन, भाव-परन, नृत्य-परन, झूला-परन, सार्थक-परन, चक्करदार-परन, साथ-परन, गत-परन इत्यादि पुस्तक के आकर्षण हैं। देहली, लखनऊ, जयपुर और अजराड़ा बाज के कायदे, मुखड़े, तोड़े, मोहरे, परन, तिहाई आदि सभी चीजें बड़ी सरलता से समझाई गई हैं। पृष्ठ-संख्या १४४ मूल्य ३)

ताल-प्रकाश

[लेखक—भगवतशरण शर्मा, प्रस्तावना ले०—पं० किशन महाराज]

इसमें तबले का इतिहास, विभिन्न घराने, तबले के अंग, पुड़ी बनाना, स्याही रखना, तबले के बोल और उन्हें बजाना, हाथ का रखाव, बैठक, तबला-सम्बन्धी पारिभाषिक शब्द, ताल के दस प्राण, हाथों की तैयारी का गुप्त रहस्य, रियाज करने तथा उस्ताद बनने का रहस्य, संगत करने का तरीका, जुगलबन्दी का ढंग, कठिन लयकारियों का लिखना, विभिन्न बाज और उनकी विशेषताएँ, कायदे और उनके प्रस्तार करने का ढंग, कायदे बनाना, बाँट करना, गतें बनाना, टुकड़े, लग्गी, रेले तथा रौ बनाना, मोहरा और परनें, तिहाइयाँ और चक्रदार एक से सोलह मात्रा तक की, चक्रदार और तिहाई बनाने का तरीका, ताल-रचना के सिद्धान्त, प्राचीन ग्रन्थों में ठेकों के रूप, चौबीस प्रचलित ठेके, २०० से अधिक अप्रचलित तथा प्रचलित तालें, अनेक प्रचलित तथा अप्रचलित तालों का पूरा-पूरा बाज तथा उनमें तिहाइयाँ, परनें, मुखड़े, रेले और चक्रदार बनाना, परीक्षा के तबले की तैयारी करना, ताल-प्रबन्ध, किसी एक ताल में अन्य तालों का बजाना, लय-प्रबन्ध, मृदंग और उसका परिचय, मृदंग के बोल, हस्त-साधन, गण तथा छन्दों के आधार पर बोलों का प्रस्तार करना, मृदंग के ठेके तथा चारताल का पूरा बाज, प्रत्येक मात्रा से उठनेवाली कमाली चक्रदार तथा फरमाइशी

चक्रदार बनाना, स्तुतियाँ, प्रिमलू, ७० लहरे, कर्नाटक-ताल-पद्धति और उसके सिद्धान्त, कर्नाटकीय तथा उत्तरीय ताल-पद्धतियों की तुलना तथा दोनों पद्धतियों में तालों को लिखना, उस्तादों की कुछ गुप्त बातें, कहरवा बजाने के विभिन्न ढंग, द्रुत त्रिताल की गुप्त तैयारी, बाईस प्रसिद्ध तबला-वादकों की जीवनियाँ, ताल-सम्बन्धी परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र, लालकिला, फुलझड़ी, पेच, गाँस, लोम-विलोम की गत, चारबाग, जवाबी परनें, अंगुश्ताना बोल, विभिन्न उस्तादों की गतें, एकहत्थी परन, तोप का बोल, पिंगल, फरद या एक्कड़, तार-परन, गुम्बद, ताँता, लतीफा, पड़ार, नवहक्का, दुपल्ली, तिपल्ली, चौपल्ली, बाँट, चलन, नृत्य की संगति तथा सोलो-वादन आदि पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है। चित्र लगभग ५०, पृष्ठ-संख्या २७२, मूल्य ६)

कायदा और पेशकार [लेखक—सत्यनारायण वशिष्ठ]

इस पुस्तक में प्राचीन ताल धृताल (आड़ा चारताल), मठताल (सूलफाख्ता), रूपक, झपताल, त्रिपुट, आदिताल (तीनताल), एकताल में अनेक कायदा और पेशकार दिए हुए हैं। उपर्युक्त ताल प्राचीन होते हुए भी कायदा एवं पेशकार आधुनिक ढंग में दिए हैं। नवीन संस्करण छपकर तैयार है। मूल्य २)५०

ताल-मार्तण्ड [लेखक : सत्यनारायण वशिष्ठ]

इस ग्रन्थ का संशोधित चतुर्थ संस्करण अब प्रकाशित हो गया है। यह ताल-विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है और गान्धर्व-महाविद्यालय की 'अलंकार', प्रयाग-संगीत-समिति की 'प्रवीण' तथा गोरखपुर-यूनिवर्सिटी एवं सागर-यूनिवर्सिटी की बी० ए० तक की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में स्वीकृत है। इसमें—तबले के अंग, तबले के शब्द और उनका निकालना, तबले के पारिभाषिक शब्द और उनका

परिचय, ताल के दस स्तम्भ, तबला मिलाना, हस्त-साधन और अभ्यास की विधि, शब्दों की रचना, संगति करने के नियम, तबले के घराने और घरानेदार तथा तीनताल, झपताल, आड़ाचारताल, एकताल, रूपक, दादरा, चाचर अथवा दीपचन्दी, कहरवा, फरोदस्त, झूमरा, चारताल, धम्मार, शूल, तेवरा, पंजाबी, तिलवाड़ा, झम्पा, जत, पश्तो तालों के अल्प परिचय, प्रकार, पेशकार, कायदे, रेले, गत-कायदे, गतें, टुकड़े, मुखड़े, तिहाइयां, मुहरे, फरमाइशी परनें, चक्राकार परनें, तथा ९, ११, १३, १५, १७, १८, १९ एवं २१ मात्राओं की तालों में बजाने के लिए विभिन्न बोल, परनें, पेशकार, टुकड़े, मुखड़े, रेले, गतें इत्यादि सामग्री दी गई है। अन्त में प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर १२५ अप्रचलित तालों के ठेके भी दे दिए गए हैं, जिससे इस ग्रन्थ की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। पृष्ठ-संख्या ३८०, सजिल्द मूल्य ६)

तबले पर दिल्ली और पूरब

[लेखक—सत्यनारायण वशिष्ठ]

(गान्धर्व महाविद्यालय-मंडल एवं प्रयाग-संगीत-समिति द्वारा पाठ्यक्रम में स्वीकृत)

इसमें तबले का इतिहास, तबला और दिल्ली, दिल्ली-बाज बजाने का तरीका, दिल्ली-बाज के वादकों में कमियाँ, दिल्ली-बाज के वादकों की कमियों का निराकरण, दिल्ली-बाज के उस्ताद, प्रयोग, सम्बन्धित घराना, तबला और पूरब, पूरब-बाज की कमियाँ, दोषों का निराकरण, बनारस, भटोला, फर्रुखाबाद, लखनऊ के घराने, पूरब तथा दिल्ली में साम्य आदि विवरण के साथ-साथ दिल्ली और पूरब के अनेक पेशकार, कायदे, रेले आदि दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या २५६, मूल्य ५)

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

अप्रचलित कायदे और गतें

[लेखक—सत्यनारायण बशिष्ठ]

इसमें मृदंग का इतिहास, मृदंग के ठेकों को तबले के बोलों में परिवर्तित करके बजाना, अप्रचलित तालों का प्रयोग एवं उनको प्रचार में लाना, प्राचीन तालों द्वारा लाभ, अप्रचलित तालों को बजाना, ठेके के चलन के अनुसार बोलों का निर्माण, लहरे की अनुपयुक्तता, रेडियो द्वारा अप्रचलित तालों का प्रचार, ५ मात्रा में अप्रचलित तालें तथा उनके ठेके, कृष्णा ताल में गतें व कायदे, ७ मात्रा में अप्रचलित तालें तथा उनके ठेके, कोकिला ताल में गतें व कायदे, ९ मात्रा में अप्रचलित तालें तथा उनके ठेके, हंस ताल में गतें व कायदे, ११ मात्रा में अप्रचलित तालें तथा उनके ठेके, इकताला में गतें व कायदे, १३ मात्रा में अप्रचलित तालें तथा उनके ठेके, चन्द्र चौताल में गतें व कायदे; १५ मात्रा में अप्रचलित तालें, उनके ठेके तथा कायदे इत्यादि सामग्री दी गई है। पृष्ठ-संख्या ७४, मूल्य ३)

संगीत-निबन्धावली (प्रथम भाग)

[सम्पादक—लक्ष्मीनारायण गर्ग]

[भूमिका-लेखक—श्रीकृष्णनारायण रातांजन्कर]

इसमें स्वतन्त्र भारत और शास्त्रीय संगीत, संगीत और जीवन, संगीत की शक्ति, वैदिक और पौराणिक संगीत, भारतीय संगीत का इतिहास, भारतीय संगीत की वाद्ययन्त्र-परम्परा, संगीत-अभिनय और नृत्य, संगीत में स्वर-ताल और साहित्य, भारतीय संगीतज्ञ और उनकी कला, खयाल और ध्रुपद, संगीत के सनातन भाव तथा शास्त्रीय संगीत व लोक-गीत इत्यादि २३ महत्त्वपूर्ण निबन्ध दिए गए हैं, जिन्हें भारत के विद्वान् संगीतकार और साहित्यकारों ने प्रस्तुत किया है। पृष्ठ-संख्या १५६, सजिल्द मूल्य २)५० डाक-व्यय पृथक्

भातखण्डे संगीत-पाठमाला

[प्रथम भाग]

इस पुस्तक में आचार्य भातखण्डे द्वारा प्रतिपादित संगीत-सिद्धान्तों को संक्षिप्त और उपयोगी रूप में दिया गया है। कोमल और तीव्र स्वर, शुद्ध और विकृत स्वर, अचल थाट, ७२ थाट, आरोह, अवरोह, औडव, षाडव, सम्पूर्ण, ४८४ राग-रचना-सिद्धान्त, राग, स्थायी, आरोही, अवरोही तथा संचारी वर्ण, वक्र, वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, देशी और मार्गी संगीत, स्वरलिपि, शुद्ध–छायालग तथा संकीर्ण राग, ग्रह, न्यास, आलाप, अपन्यास, रूपक, स्थायी, अन्तरा, पूर्वांग, उत्तरांग, सन्धिप्रकाश, गान्धर्व, गान, जाति, ग्रामराग, उपराग, भाषा, विभाषा, निबद्ध, अनिबद्ध, आलप्ति, प्रबन्ध, धातु, आभोग, कूटतान, पकड़, तान, विलम्बित, मध्य और द्रुत लय, आलाप-योग्य राग, रागांग, भाषांग, क्रियांग, उपांग, क्षुद्र-गीतोपयोगी राग; आश्रय राग, वाणियाँ—गौरहारी, नौहारी, डागुरी, खण्डारी, शुद्धा, भिन्ना, गौडी, वेसरा, साधारणी; खयाल, टप्पा, गजल, ध्रुपद, गमक तथा जन्य राग की पूरी-पूरी व्याख्या दी गई है और ५० से अधिक मुख्य-मुख्य रागों पर सरल एवं सुबोध विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

पुस्तक के समस्त विषय प्रश्न और उत्तर के रूप में समझाए गए हैं, जिससे कि साधारण विद्यार्थी भी लाभ उठा सके। पृष्ठ-संख्या ६८, मूल्य १)५०

डाक-व्यय पृथक्

संगीत-अष्टछाप

लेखक—गोकुलानन्द तैलंग एवं बनवारीलाल भारतेन्दु]

[भूमिका-लेखक—ठा० जयदेवसिंह

इस ग्रन्थ में ब्रज के आठ (अष्टछाप के) महान् कवियों—नन्ददास, सूरदास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी, कुम्भनदास, कृष्णदास, गोविन्ददास, और परमानन्ददास की महत्त्वपूर्ण रचनाओं (ध्रुवपदों) की ७३ परम्परागत स्वरलिपियाँ और उनका साहित्यिक भाव-विश्लेषण बड़े मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। आठों कवियों के जीवन-चरित्रों को भी बड़े प्रामाणिक ढंग से दिया गया है।

ब्रज-भूमि के पावन संगीत और साहित्य का आनन्द लेने वाले रसिक और भक्त इस ग्रन्थ को अवश्य मँगाएँ। पृष्ठ-संख्या २३६, सजिल्द मूल्य ६)

रविशंकर के आर्केस्ट्रा

पं० रविशंकर के परिश्रम का यह नवनीत पुस्तक-रूप में हम प्रथम बार प्रस्तुत कर रहे हैं। इसमें वसन्त, रागेश्वरी, श्री, बिहाग, शहाना, मालकंस, तिलककामोद, हंसध्वनि, देश, गारा, बसन्तबहार, बैरागी, झिंझोटी, मधुकंस, मारूबिहाग, दुर्गा, नटमल्लार, टोड़ी, देशी, मोहनी, भैरवी, मलुहाकेदार, आभोगीकान्हड़ा, यमनकल्याण, गुञ्जीकान्हरा, कौशिकध्वनि, मोहनकंस, शुद्धसारंग, कामोद, मुलतानी, शुद्ध पीलू, गाँव की गोरी, कारवाँ, मधुवन्ती, मेघ, दरबारीकान्हरा, तरंग, काली बदरिया, बागेश्वरी, निर्झर (दीपिका), उषा, पंचम, जोग, कीरवानी, आह्वान, गीती, अन्तर्ज्वाला, रंगीन कल्पना, जयजयवन्ती, ईरान की ओर आदि आर्केस्ट्रा स्वरलिपि-सहित दिए गए हैं।

पुस्तक में दी गई विस्तृत भूमिकाओं में वाद्यवृन्द - सम्बन्धी गवेषणात्मक सामग्री प्रस्तुत की गई है। पृष्ठ-संख्या १६६, सजिल्द मूल्य ६)

भातखण्डे स्मृति अंक [सम्पादक—लक्ष्मीनारायण गर्ग]

इसमें भातखण्डेजी का अगाध संगीत-ज्ञान और उनकी सेवाएँ, जीवन-संस्मरण, भातखण्डेजी से कुछ मुलाकातें, भातखण्डेजी की दृष्टि में भातखण्डे इत्यादि लेख प्रतिनिधि विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं तथा भातखण्डेजी द्वारा लिखित घरानेदार गायक, श्रुति-चर्चा, नोटेशन और ग्रन्थ, दरबारी संगीत तथा वसीयत इत्यादि महत्त्वपूर्ण लेख और टिप्पणियाँ दी गई हैं। पृष्ठ-संख्या ७०, मूल्य १)२५

शार्ङ्गदेव-रचित संगीतरत्नाकर (प्रथम भाग)

हिन्दी अनुवाद

[अनुवादक—लक्ष्मीनारायण गर्ग]

'संगीतरत्नाकर' भारतीय संगीत का आधार-ग्रन्थ है। तेरहवीं शताब्दी के पश्चात् लिखे गए सभी संगीत-ग्रन्थों पर इसका प्रभाव है। संस्कृत के इस अमूल्य ग्रन्थ के प्रथम खण्ड का यह सर्वप्रथम हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित किया गया है, जिसमें शरीर की समस्त इन्द्रियों एवं अंग-प्रत्यंग का वर्णन, चक्र तथा नाड़ियाँ, नाद के रूप, श्रुति, सारणा, स्वर, श्रुति-जातियाँ, स्वर-स्थिति, स्वर-प्रकार, स्वर-वर्ण तथा कुल, स्वरों के द्वीप-ऋषि-देवता-पशु-पक्षी-छन्द तथा रस, ग्राम और उसके प्रकार, मूर्च्छना, शुद्ध एवं कूट तान, प्रस्तार, खण्डमेरु, नष्ट-उद्दिष्ट, स्वर-साधारण, जाति-साधारण, काकली व अन्तर स्वरों का प्रयोग, वर्ण-लक्षण, ६३ अलंकार, ग्रह, अंश, तार, मन्द्र, न्यास, अपन्यास, संन्यास, विन्यास, बहुत्व, अल्पत्व, लंघन, अन्तरमार्ग,

षाडव तथा औडुव की व्याख्या, १८ जातियों के स्वरूप का वर्णन, पद तथा उनके प्रस्तारों की स्वरलिपियाँ, कपाल तथा कम्बल, स्वरांकन-सहित गीतियों के प्रकार और अन्त में ५०४० स्वर-प्रस्तार दिए गए हैं। प्रारम्भ में दी गई विस्तृत और महत्त्वपूर्ण भूमिका में उन सभी आरोपों का खण्डन किया गया है, जो शार्ङ्गदेव-जैसे महान् आचार्य पर अबतक लगाए गए हैं।

अनुवाद मूल विषय और भाव की रक्षा करते हुए ऐसे सरल शब्दों में यथास्थान संक्षिप्त व्याख्या देते हुए प्रस्तुत किया गया है कि संगीत के साधारण विद्यार्थी भी इससे लाभान्वित हो सकते हैं। संगीत से सम्बन्धित प्रत्येक विद्यापीठ के उच्च पाठ्य-क्रम में 'संगीतरत्नाकर' का प्रमुख स्थान है। संगीत-जिज्ञासु तथा संगीत-विद्वान्—दोनों को ही इस ग्रन्थ का आद्योपान्त पठन एवं मनन करना चाहिए। पृष्ठ-संख्या २२४, सजिल्द मूल्य ७)

मधुर चीजें [लेखक—जी० एस० पाटणकर]

इसमें यमनकल्याण, बागेश्री, दुर्गा, देस, बहार, आसावरी, शंकरा, भीमपलासी, सोहनी, तिलंग, रागेश्री, पटदीप, सारंग, अड़ाना, तिलक-कामोद, मालकंस, मालगुंजी, वसन्त, भैरव, भैरवी, जयजयवन्ती, गौड़सारंग, बिहाग, हमीर, गौड़मल्हार, भूप, देशकार, बिलावल, मियाँमल्हार, काफी, केदार, दरबारीकानड़ा, खमाज, तोड़ी, मुलतानी, पूरिया, हिण्डोल—इन ३७ रागों में ३-३ नवीन गीतों की बन्दिशें झपताल, एकताल व त्रिताल में दी गई हैं। गायकों के लिए यह बहुत ही उपयोगी पुस्तक है। पिछले कई वर्षों से यह पुस्तक अप्राप्य थी। पाठकों की विशेष माँग पर इस पुस्तक को भातखण्डे स्वरलिपि-पद्धति में पुनः प्रकाशित किया गया है। पृष्ठ-संख्या १२८, मूल्य २)५०

डाक-व्यय पृथक्

भारतीय संगीत का इतिहास

[लेखक—भगवतशरण शर्मा]

प्रस्तुत ग्रन्थ भारतीय संगीत का ऐतिहासिक सिंहावलोकन और उसके क्रमिक विकास का दिग्दर्शन कराने की दृष्टि से लिखा गया है। यह हिन्दी में अपने ढंग का प्रथम प्रयास है। अनुसन्धान में प्रवृत्त होनेवाले संगीत-प्रेमी, विशेषतया आज के संगीत-विद्यार्थी, इसे सरलता-पूर्वक हृदयंगम कर सकेंगे और उन्हें कोई उलझन नहीं होगी। संगीत के विभिन्न पाठ्यक्रमों में यह ग्रन्थ सहायक सिद्ध होगा। सम्पूर्ण ग्रन्थ—भारतीय संगीत की प्राचीनता, पूर्व-युग, पूर्व-मध्य-युग, मध्य-युग, तुगलक-काल, मुगल-काल, मध्यकालीन तथा प्रान्तीय संगीत, आधुनिक युग, भारतीय सिने-संगीत का इतिहास, भारतीय स्वरों का इतिहास, भारतीय वाद्यों का इतिहास इत्यादि सोलह अध्यायों में विभक्त है। आर्टपेपर पर ३२ महत्त्वपूर्ण चित्र तथा सुविधा की दृष्टि से अन्त में अकारादि-क्रम-सूची भी दे दी गई है। पृष्ठ-संख्या २०८, सजिल्द मूल्य ५)

राग-कोष [लेखक—'वसन्त']

उत्तर तथा दक्षिण-भारत के प्रचलित और अप्रचलित १४३८ रागों का वर्णन इसमें दिया गया है। उत्तर-भारतीय सभी रागों के वादी-संवादी स्वर, थाट-नाम, समय, वर्जित स्वर तथा आरोह-अवरोह और कर्नाटक-रागों के मेल-नाम तथा आरोह-अवरोह पूरे-पूरे रूप में दिए गए हैं।

यह एक ऐसी निधि है, जो प्रत्येक संगीतज्ञ को अपने पास हर समय रखनी चाहिए। पुस्तक में इतना भंडार होते हुए भी मूल्य बहुत

कम रखा गया है। प्रथम संस्करण के शीघ्र ही समाप्त होने की आशा है, अतः आज ही अपनी प्रति का आर्डर भेजें। संगीत-प्रेमियों और विद्यार्थियों में वितरित करने के लिए यह एक अमूल्य उपहार है। पृष्ठ-संख्या ८८, मूल्य १)२५

संगीत-पारिजात

[लेखक—पं० अहोबल •• भाष्यकार—कलिन्द]

उत्तर-भारतीय संगीत का ५०० श्लोकों से सम्पन्न यह एक प्रामाणिक ग्रन्थ है। इसमें संगीत-महिमा, नाद, श्रुति, स्वर तथा उनके भेद, मूर्च्छना, ग्राम, मूर्च्छनाओं के देवता, तान-प्रकार, स्वर-प्रस्तार, खण्डमेरु, नष्टोद्दिष्ट-प्रकार, वर्ण-अलंकार, जाति-निरूपण, ग्रह, न्यास, अपन्यास, संन्यास, विन्यास, गमक के प्रकार, गीति तथा सैंधव, मल्लार, मेल, नीलाम्बरी, मालवश्री, रक्तहंस, गौरी, मल्लारी, पंचम, वसन्त, मुखारी, भैरवी, भूपाली, कोल्लहासभैरव, वसन्तभैरव, मध्यमादि, बंगाली, विभास, कानड़ी, मेघनाद, तोड़ी, छायातोड़ी, मार्गीतोड़ी, घण्टा, वराटी, शुद्धवराटी, नागवराटी, तोड़ीवराटी, पुन्नाग-वराटी, प्रतापवराटी, शोकवराटी, कल्याणवराली, खम्बावती, आभीरिका, रामकरी, सारंग, मालव, गुणक्रिया, ककुभ, शंकराभरण, बड़हंस, बेला-वली, केदारी, काम्बोधी, गोपीकाम्बोधी, दीपक, ललिता, बहुल, गुर्जरी, कौमारी, रेवा, गौल, केदारगौल, कर्णाटगौल, सारंगगौल, रीतिगौल, नारायणगौल, मालवगौल, देशी, हिन्दोल, मार्गहिन्दोल, ढक्का, नाट, नट, सालंक, छायानाट, कामोदनाट, आभीरनाट, कल्याणनाट, केदार-नाट, वैराटीनाट, आसावरी, सावेरी, सालंग, श्री, पहाड़ी, बिहागड़ा, पूर्वीसारंग, सामन्त, मंगलकोष, नादरामक्रिया, कुडाइ, गौंड, देवगिरि, देवगान्धारी, त्रिवेणी, कुरंग, सौदामिनी, वैजयन्ती, हंस, कोकिल, जयश्री, सुरालय, अर्जुन, ऐरावत, कंकण, रत्नावली, कल्पतरु, सोरठी,

मारु, कुमुद, चक्रधर, सिंहरव, मंजुघोषा, शिववल्लभा, मनोहर, आनन्दभैरवी, शंकराभरण, मानवी, राजधानी, शर्वरी, शुद्धकैशिक, तैलंग तथा भीमपलासिका इत्यादि १२५ प्राचीन रागों का स्वर-सहित परिचय दिया गया है। (पृष्ठ ४८ पर 'संगीत के कुछ प्राचीन ग्रन्थ' शीर्षक के अन्तर्गत दी हुई पुस्तकों में 'संगीत-पारिजात' नामक जिस पुस्तक का विज्ञापन है, यह वही है।) पृष्ठ-संख्या १६६, मूल्य ५)

संगीत-दर्पण

[लेखक—पं० दामोदर •• टीकाकार—पं० विश्वम्भरनाथ भट्ट]

सत्तरहवीं शताब्दी के इस ग्रन्थ में शारीर-विचार, नादोत्पत्ति-प्रकार, ब्रह्मग्रन्थि-लक्षण, वायु, श्रुति-स्वर-लक्षण, वादी-संवादी-भेद, ग्राम-मूर्च्छना, कूटतान, खण्डमेरु, नष्ट-उद्दिष्ट-प्रकार, साधारण प्रकरण, वर्ण, ग्रह, न्यास, अंश, तार, मन्द्र, अपन्यास, संन्यास, विन्यास, बहुत्व, अल्पत्व, स्थायी, अलंकार, प्रस्तार, जाति, क्रियांग, काण्डारणा, शुद्ध-छायालग-संकीर्ण रागभेद, राग-समय, ऋतु, शिव-मत हनुमन्मत तथा रागार्णव-मत के राग व उनके ध्यान दिए गए हैं। यह ग्रन्थ 'संगीत-रत्नाकर' जैसे विशाल ग्रन्थ का सार-रूप प्रस्तुत करता है, जो संगीत के उच्चस्तरीय अध्ययन के लिए पठनीय तथा मननीय है। (पृष्ठ ४८ पर 'संगीत के कुछ प्राचीन ग्रन्थ' शीर्षक के अन्तर्गत दी हुई पुस्तकों में 'संगीत-दर्पण' नामक जिस पुस्तक का विज्ञापन है, यह वही है। पृष्ठ-संख्या १२०, मूल्य २)५०

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

स्वरमेल-कलानिधि

[लेखक—रामामात्य •• हिन्दी-टीकाकार—पं० विश्वम्भरनाथ भट्ट]

इसकी गणना दाक्षिणात्य पद्धति के मध्यकालीन आधारभूत ग्रन्थों में की जाती है। इसका रचना-काल १५५० ई० है। स्वर-प्रकरण, मेल-प्रकरण तथा राग-प्रकरण के अन्तर्गत गान्धर्व गान, देशी, मार्गी, शुद्ध तथा विकृत स्वर, श्रुति-विभाजन, थाटों के २० भेद तथा उनसे उत्पन्न होनेवाले राग, रागों के उत्तम, मध्यम और अधम—तीन भेद तथा उनके लक्षण सूत्र-शैली में दिए गए हैं। (पृष्ठ ४८ पर 'संगीत के कुछ प्राचीन ग्रन्थ' शीर्षक के अन्तर्गत दी हुई पुस्तकों में 'स्वरमेल-कलानिधि' नामक जिस पुस्तक का विज्ञापन है, यह वही है।) पृष्ठ-संख्या ५२, मूल्य १)२५

दत्तिलम् (हिन्दी-टीका-सहित)

[लेखक—दत्तिल मुनि •• टीकाकार—कलिन्द]

'नाट्यशास्त्र' के रचयिता महर्षि भरत के पुत्र दत्तिल ने इस ग्रन्थ की रचना की थी। यह कृति लगभग दो हजार वर्ष पूर्व की है, जिसमें २४४ श्लोक हैं। श्रुति, स्वर, ग्राम, जाति, वर्ण, मूर्च्छना, तान, अलंकार इत्यादि के साथ-साथ प्राचीन संगीत के सभी महत्त्वपूर्ण विषयों पर सूक्ष्म रूप में प्रकाश डाला गया है। अन्त में ताल से सम्बन्धित अध्याय दिए गए हैं, जिनमें मन्द्रक, अपरान्तक, उल्लोप्यक, प्रकरी, ओवेणक, रोविन्दक, उत्तर तथा वर्धमान आदि की व्याख्या की गई है। (पृष्ठ ४८ पर 'संगीत के कुछ प्राचीन ग्रन्थ' शीर्षक के अन्तर्गत दी हुई पुस्तकों में 'दत्तिलम्' नामक जिस पुस्तक का विज्ञापन है, यह वही है।) पृष्ठ-संख्या ७०, मूल्य २)५०

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

संगीत-चिन्तामणि

[लेखक—आचार्य बृहस्पति एवं श्रीमती सुमित्राकुमारी]

यह संगीत की उच्चतम परीक्षाओं के परीक्षार्थियों और जिज्ञासुओं के लिए संगीत का एक अनुपम ग्रन्थ है। ग्रन्थ एक ही जिल्द में दो खण्डों में विभाजित है :—

प्रथम खण्ड—संगीत, साहित्य और रस; भारतीय संगीत के कुछ शास्त्रकार; एक विहंगावलोकन; मतंग मुनि के कुछ निर्णायक कथन; महामाहेश्वर श्रीमान् अभिनवगुप्ताचार्य के कुछ विचार; कुछ पारिभाषिक शब्द और उनका रहस्य; आचार्य निःशंक शार्ङ्गदेव का एक सन्देश; स्वर-स्थापन की प्राचीन प्रणाली; मुकाम, मूर्च्छनाएँ और मेल; स्वर्गीय भातखण्डेजी के कुछ प्रश्न और उनका समाधान; ध्रुवपद के विषयों का स्रोत; लय-प्रयोग के कुछ रहस्य; अमीर खुसरो; स्वामी हरिदासजी का संगीत-पक्ष; तानसेन-विषयक कुछ ऐतिहासिक तथ्य; औरंगजेब का संगीत-प्रेम; कुछ अनुभव।

द्वितीय खण्ड—संगीत; ध्रुवपदकारों और ध्रुवपद-गायकों के आश्रयदाता; संगीतोपनिषद्; ग्राम, सारणाएँ एवं श्रुतियाँ; मध्यकालीन स्वरों की प्रकट और गुप्त संज्ञाएँ; सदारंग-परम्परा के कुछ रहस्य; मेल-पद्धति पर सदारंग-परम्परा का कुछ प्रभाव; मुआरिफुन्नगमात की कुछ शंकाएँ और उनका समाधान; लय-बद्ध तानों के निर्माण की विधि (गौड़सारंग के माध्यम से); शुद्धमलार और गौड़मलार; विलासखानी और उसके प्रकार; ताल और लय; एक शोध-यात्रा; रामपुर-परम्परा और स्व० भातखण्डे; इत्यादि। पृष्ठ-संख्या लगभग ६०८, सजिल्द मूल्य २०) डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

पाश्चात्य संगीत-शिक्षा

[लेखक—भगवतशरण शर्मा]

इसमें मेलाडी तथा हारमनी, पाश्चात्य स्वरलिपि का स्पष्टीकरण तथा भारतीय स्वरलिपि से उसका तुलनात्मक अध्ययन, शार्प, फ्लैट, की-सिगनेचर, बार-लाइन्स, ट्रैबिल, बास, एल्टो, टेनर, क्लैफ; सेमीब्रीव, मिनिम, क्रौशे, क्वेवर, सैमीक्वेवर, डैमी-सैमीक्वेवर, सिम्पिल टाइम, ड्यूपिल टाइम, ट्रिपिल टाइम, क्वाड्रूपिल टाइम, कामन टाइम, कम्पाउण्ड टाइम के भेद; रिद्म, सिन्कोपेशन, स्लर, डुप्लैट आदि, रैस्ट, पाज, स्टैकैटो आदि; डायटानिक सैमीटोन, क्रामैटिक सैमीटोन, परफैक्ट इन्टरवल, मेजर, माइनर, डिमिनिश्ड, आगमेन्टैड तथा साधारण कम्पाउण्ड और इन्वरटैड इन्टरवल, मेजरस्केल, माइनरस्केल, क्रोमेटिक स्केल, ऐनहारमोनिक्स तथा भारतीय दस थाटों के स्वरों का लिखना, कर्नाटक तथा उत्तर-भारतीय रागों की पाश्चात्य स्वरलिपि, भारत के राष्ट्रीय गीत की पाश्चात्य स्वरलिपि, प्रचलित बीसियों पाश्चात्य वाद्य-यन्त्रों का सचित्र वर्णन, पाश्चात्य महान् संगीतकारों के जीवनवृत्त, पाश्चात्य संगीत के अनेक पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या, पाश्चात्य संगीत में प्रयुक्त होनेवाले सैकड़ों शब्दों के हिन्दी-नाम और प्रत्येक अध्याय के अन्तर्गत पाश्चात्य संगीत से सम्बन्धित परीक्षाओं में आनेवाले अनेक प्रश्न तथा कुछ संगीत-प्रधान व्यंग्य-चित्र इत्यादि सामग्री दी गई है। चित्र-संख्या सौ से अधिक, पृष्ठ-संख्या १२४, सजिल्द मूल्य ७)

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

'काका' हाथरसी की हास्य-पुस्तकें

काका की कचहरी (संशोधित संस्करण)

इसमें बढ़ार की दावत, कलियुगी-कीर्तन, लड्डू-वन्दना, आराम-कुर्सी तोड़ता हूँ, सम निकल गई, कवि-चालीसा, आराम करो, मैं हलवाई, गुड़गुड़देवा, कुल्हड़ की कुण्डलियाँ, खटपट-रामायण, श्री गर्दभ-गुणगान, फटीचर प्रोफेसर, तुक्तक, शादी करना है पाप सखे, आओ खटमल प्यारे, सत्तू-सप्तक, मैं हूँ फारम का भैंसा, भज कलदारम्, फैशन बनाइए, नहीं मिलता कहीं हज्जाम, रजाई के अन्दर, 'म' की मेल-ट्रेन, 'क' की करामात, देशी बहादुर, कुत्ता-कान्फ्रेंस, खट्ट-पट्ट हो गई, पान और बीबी, मच्छर-चालीसा, मेरा ससुर करोड़ीमल हो, आधुनिक सुदामा-चरित्र, साहित्यिक पण्डा, जवानी उसको कहते हैं, चोखे चौपदे, उलूक-नयन, दाढ़ी और बहुत दिनों में आई होली इत्यादि ७६ कविताएँ, पैरोडियाँ और हास्यपूर्ण लेख व कहानियों के अतिरिक्त हँसाते-हँसाते पेट फाड़ देने वाले अनेक चुटकुले तथा व्यंग्य-चित्र दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या १४८, सजिल्द मूल्य २)५०

पिल्ला

इसमें मूँछ-माहात्म्य, मेंढक-वन्दना, साँड़-वन्दना, 'काका' की ऊँट-गाड़ी, पजामा और लँगोटी, मोटा और पतला, कुर्ता-काव्य, मैं घोड़ा तुम घोड़ी, डण्डा-प्रार्थना, कलियुगी-वन्दना, पंडित लपकानन्द, रँगपल्टा, 'काका' की फुलझड़ियाँ, टर्र-दोहावली, अवसरवादी, गधापुराण, ढोंगी नेता-चालीसा, रोटी-वन्दना, ब्लैक-सम्मेलन तथा पिल्ला-पुराण इत्यादि लगभग ७० हास्य-कविताएँ और लेख व्यंग्य-चित्र-सहित दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या १५२, सजिल्द मूल्य २)५० डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

म्याऊँ

इसमें म्याऊँ-चालीसा, काका की कुण्डलियाँ और फुलझड़ियाँ, स्वराज्य-कीर्तन, धर्म के ठेकेदार, मेरी भैंस, कलियुगी गीता, कर्ज का मर्ज, चेयरमैनी, रामराज्य की रेलमपेला, ये मोटरों के ठेले, चूहानन्द, चढ़ी बारात काने की, मैं पैट्रोल तू दियासरैया, प्राइवेट पिटाई, तू गा बेटा सरगम, डंडा देश मियाँ के जा, ओम् जय नलदेव हरे, वनस्पति-वन्दना, ओ रसगुल्ला, प्रिये-वन्दना, मूर्ख बनो मतिमन्द बनो, समधी-हास्य, इंगलिश होली, लीडरी का नुस्खा, नारी क्यों मोंछ-विहीन रही, घनचक्करराय, छैला और दीवाना की फुलझड़ियाँ, अधन्ना लेके आया हूँ, तसवीर चाट लेते हैं, मार मलाई बन हलवाई, मच्छर-मीटिंग, म्याऊँ-दोहावली, कलियुगी भक्त तथा बुश्शर्ट-महिमा इत्यादि ९२ कविताएँ और लेखों के अतिरिक्त चुटकुले तथा मजेदार कार्टून भी दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या १६८, सजिल्द मूल्य २)५०

दुलत्ती

इसमें नोट-प्रार्थना, क्रान्ति का बिगुल, सौ पैसे का एक रुपैया, आराम सत्य है, झूठ का घूंट, रबड़ी-माहात्म्य, वर्षा-विरह, दहेज की बारात, ससुर-वन्दना, भैंस के विरह में, कथा का कर्ज, बर्थ-कन्ट्रोल, काका-दोहावली, गधे को मानपत्र, चुंगी का पुंछल्ला, भंग की तरंग, अकाल-मन्त्री को मानपत्र तथा दाढ़ी-दल इत्यादि तीस हास्य-कविताएँ और देखते ही हँसानेवाले व्यंग्य-चित्र दिए गए हैं। इसकी भूमिका हास्यरस के भारत-विख्यात कवि श्री गोपालप्रसाद व्यास ने लिखी है। पृष्ठ-संख्या ११६, सजिल्द मूल्य २)५०

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

काका के प्रहसन

इसमें विभिन्न अवसरों पर रंगमंच पर खेलने-योग्य—'भंग की तरंग, चुनाव का टट्टू, हमीर का हलवा, मनसुखा-लीला, लल्ला को ब्याह, फ्री-स्टाइल गवाही, माखन-चोरी, लाला डकारचन्द'—ये ६ एकांकी प्रहसन दिए गए हैं। इनमें से कुछ समाज की कुरीतियों पर चोट करते हैं, तो कुछ धार्मिक ढोंगियों की पोल खोलते हैं। कुछ प्रहसन ऐसे भी हैं, जिनमें ब्रज की विभिन्न लीलाएँ दी गई हैं। अनेक कार्टून भी दिए गए हैं। हास्यरस के पुट सभी में भरपूर हैं।

प्रत्येक प्रहसन आधे से एक घंटे तक का है। सभी सफलतापूर्वक अभिनीत हो चुके हैं। इनमें से कुछ आकाशवाणी दिल्ली से भी प्रसारित हो चुके हैं। इनके प्रदर्शन से श्रोतागण हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते हैं। पॉकिट साइज, पृष्ठ-संख्या ११२, मूल्य १)

काका के कारतूस

इसमें सत्संग, चुनाव-चर्चा, युवकों से, मक्खीमार-आन्दोलन, स्टैण्डर्ड, प्रचण्ड काव्य; क्या मैं जीवित हूँ, मसूरी-यात्रा, सच्चा वेदान्ती, कलियुगी विभीषण, उदासी का कारण, दिवाली-दक्षिणा, क्विक् मार्च, स्वर्ण-नियन्त्रण, शून्यवाद, वसन्त, मनहूस कवि से, रहस्यवाद, ससुराल-धन, स्वतन्त्र-पत्नी, पाचन-शक्ति, पिनक, झूठ, कलियुगी बाबू, रिश्वत, सीमेन्ट का थैला, कर्जा, सुनो चाऊ-एन-लाई, रौद्ररस, भारत-पाक-वार्ता, हिन्दी का मटका, चकबन्दी, घासलेट और मक्खन, 'कर'-कमाल, चुनाव-चातुर्य, राष्ट्रीय अजगर इत्यादि कवि-सम्मेलनों में धूम मचाने-वाली ३६ कविताएँ और लगभग दो दर्जन व्यंग्य-चित्र दिए गए हैं। पृष्ठ-संख्या १००, सजिल्द मूल्य २)५०   डाक-व्यय पृथक्

काकदूत [सचित्र खण्ड-काव्य

हँसाते-हँसाते लोट-पोट कर देनेवाले वर्णनों से भरपूर, हँसी-हँसी में हिन्दुस्तान की झाँकियाँ, प्रसिद्ध तीर्थों का विवरण—लगभग ५३० चतुष्पदियों में करारे व्यंग्य; ४५ के लगभग रंगीन व्यंग्य-चित्र। यह पुस्तक बालक, युवा, महिला और वृद्ध—सभी के लिए शिष्ट मनोरंजन की सामग्री से ओत-प्रोत है। आकर्षक तिरंगा मुखपृष्ठ, पृष्ठ-संख्या १४२, मूल्य २)५०

काका की फुलझड़ियाँ

इसमें नाम बड़े दर्शन थोड़े, मसूरी-यात्रा, मूँछ-माहात्म्य, दहेज की बरात, चुनाव-चातुर्य, कीलर-कांड, जम और जँवाई, कालिज-स्टूडैण्ट, पुलिस-महिमा, नई फैशन, महँगाई, दाढ़ी-महिमा, कवि-सम्मेलन, चीनी-दर्शन, कर-कमाल, बर्थ-कंट्रोल, मोटी पत्नी, रूस में हिन्दी, मृत्यु-कर, ससुराल-धन (दहेज), कलियुगी बाबू, झूठ-माहात्म्य, रिश्वत, नोट की वोट, रामराज में कामराज, अँगूठा-छाप नेता, पवित्रता, कर्जा, जमनेवाले कवि, लूटनीति, बोतल में मक्खी, नवरस-निरूपण, निष्काम हड़ताल, जनसंख्या, सुपुत्र, चुनाव की चोट इत्यादि ८२ हास्य-कविताएँ तथा दर्जनों कार्टून दिए गए हैं। पॉकिट साइज, पृष्ठ-संख्या ११२, मूल्य १)

डाक-व्यय पृथक्

काका के कहकहे

इसमें खल-वन्दना, नई सरकार, अवमूल्यन, सत्रह रस, फिल्म फुलझड़ियाँ, माता, कविता का 'भाव', परिवार-नियोजन, भंग की तरंग, मुर्दों में रोमांच, खरदूषण, महँगाई बनाम फैशन, जलेबियाँ, दाढ़ी और दाम्पत्य, पक्के गायक, चूक गए चौहान, राशि-चमत्कार, इश्क-हकीकी, तेली कौ ब्याह, चित्त भी मेरी पट्ट भी ···, फिल्मी ताड़का, कर्ज का मर्ज, मार के चमत्कार, जहाँ न पहुँचे रवि····, सच्चा विद्यार्थी, भाग्य की माया, सदाचार-क्लब, स्लीपर में साहित्य-चर्चा, धार्मिक शिकारी, राष्ट्रीय चकल्लस, काका की ललकार, हाथरसी रसिया, उल्टे लेबिल इत्यादि ५६ हास्य-कविताएँ, अनेकों कार्टून तथा २१ लोकप्रिय फिल्मी गीतों की पैरोडियाँ दी गई हैं। पॉकिट-साइज, पृष्ठ-संख्या ११२, मूल्य १)

काका की कॉकटेल

यह हास्यरस की कविताओं का नवीनतम संग्रह है, जिसमें बेढब बनारसी, बेधड़क बनारसी, गोपालप्रसाद व्यास, कुंजबिहारी पांडेय, काका हाथरसी, रमई काका, कुल्हड़, गोपालबाबू शर्मा, पैरुडीदास, वासुदेव गोस्वामी, विमलेश, शालिहास, गुरु-घंटाल, अड़ियल चन्दोसिया आदि ७० से अधिक आधुनिक हास्य-कवियों की कुल १०८ चुनी हुई कविताएँ दी गई हैं। पुस्तक में यथास्थान कार्टून भी दिए गए हैं। पॉकिट साइज, पृष्ठ-संख्या १९२, मूल्य २)

डाक-व्यय पृथक्

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

महामूर्ख-सम्मेलन

इसमें महामूर्ख-सम्मेलन, अनशन, मूर्ख-कवि-सम्मेलन, अखिल-विश्व-चूहा सम्मेलन, कंजूस-सम्मेलन, बारात की बानगी, ब्लैक-व्यापारी-सम्मेलन, 'क' के करिश्मे, मच्छर-मीटिंग—ये ८ हास्य-निबन्ध तथा कार्टून दिए गए हैं। पुस्तक अत्यन्त रोचक है। पॉकिट-साइज, पृष्ठ-संख्या १०४, मूल्य १)

तुक शब्द-संग्रह (तुक्कम् शरणम् गच्छामि)

इसमें इकत्तीस हजार से अधिक तुकें संगृहीत हैं। अपनी कविता के छन्द के अनुसार तुकें लेकर कविता में लगाते रहिए, मिनिटों में कविता तैयार। कोश बहुत निकल चुके हैं, किन्तु हिन्दी में तुकों का अभी तक कोई कोश नहीं था! उस कमी की पूर्ति काका ने की है। इसी कोश में काका हाथरसी की प्रामाणिक जीवनी तथा अनेकों चित्र भी हैं। छपाई-सफाई, गेटअप दर्शनीय है, क्योंकि यह कोश कलकत्ता के प्रसिद्ध साहित्यकार ऋषि जैमिनी कौशिक बरुआ द्वारा सम्पादित व प्रकाशित हुआ है। इसकी सफलता का एक प्रमाण यह भी है कि गत १५ अगस्त, १९६७ को कलकत्ता में इसी कोश के उद्घाटनोत्सव पर काकाजी को कलकत्ते की ५१ संस्थाओं ने पुष्पहारों से लाद दिया था और बंगाल के तत्कालीन गवर्नर श्री धर्मवीर ने काका को सम्मानित किया था।

ऐसे अद्भुत ग्रन्थ की समय रहते एक कापी पर कब्जा कर लीजिए। थोड़ी-सी प्रतियाँ बची हैं। आकार १८×२२ अठपेजी, पृष्ठ-संख्या लगभग २००, अनेकों चित्र, सजिल्द मूल्य १०)

डाक-व्यय पृथक्

संगीत-सम्बन्धी अन्य प्रकाशन

भरत का संगीत सिद्धान्त-(आचार्य्य बृहस्पति) सजिल्द मू० ६)५०
संगीत शास्त्र (के० वासुदेव शास्त्री) मू० ६)५०
मीरा संगीत मू० १)६२
तान मालिका (राजाभैया) भाग १ मू० २)६२, भाग २ मू० ३)२५
भाग ३ छप रहा है ।
ठुमरी तरंगिणी (") मू० १)२५
ध्रुपद धमार गायन (") मू० २)७५
संगीत कौमुदी भाग १-६), भाग २-५)३१, भाग ३ ५)
भाग ४ ६)
संगीत शिक्षा—रातांजनकर भाग १ मू० १)
अभिनव संगीत शिक्षा—रातांजनकर, प्रथम भाग मू० ५),
दूसरा भाग मू० ४)
अभिनव गीत मंजरी ,, भाग २-पूर्वार्ध ५)५० उत्तरार्ध मू० ७)५०
वर्णमाला— ,, मू० १)१२
हिन्दुस्तानी संगीत की स्वरलिपि—रातांजनकर मू० ०)३७
दिलखुश उस्तादी गायकी-फीरोज फ्रामजी मू० ०)७५
एनसाइक्लोपीडिया 'हिन्दुस्तानी संगीत'—फीरोज फ्रामजी,
दूसरा २), तीसरा ३), चौथा ३)५०, पाँचवाँ २), छठा १)२५
वायोलिन अथवा बेला शास्त्र —दा० ह० जोगलेकर मू० २)
भारतीय संगीत विज्ञान—घनश्यामदास मू० ३)५०
तबला कैसे बजायें—सत्यनारायण वशिष्ठ मू० २)
हाईस्कूल तबला शिक्षा ,, १)
संगीत लता —स० अ० महाडकर, प्रथम मू० २)५०
दूसरा मू० २)२५

रागविज्ञान—वि० ना० पटवर्धन पहला ३), दूसरा ४)
तीसरा ५), चौथा ५), पाँचवाँ ५), छठा ४), सातवाँ ४)
संगीतोपनिषत्सारोद्धार-(संस्कृत-इंगलिश) सुधाकलश मू० १२)
राग अने रस—पं० ओम्कारनाथ ठाकुर (गुजराती भाषा) मू० १)७५
सितार दर्पण—म० उस्ताद भीकनखाँ मू० ४)
विष्णुधर्मोत्तरपुराण—बी० जे० सन्देसर मू० २०)
नाट्य शास्त्र (संस्कृत) पहला २५), तीसरा २०), चौथा २५)
मेलरागमालिका—महावैद्यनाथ शिवन् (इंगलिश-संस्कृत) मू० ५)
वनिता संगीत विहार—यशोदादेवी मू० २)
नन्द पुष्पांजलि— " मू० १)५०
रागविबोध—सोमनाथ (संस्कृत) मू० १५)
संग्रहचूड़ामणि—गोविन्द (संस्कृत) मू० १५)
सगीतरत्नाकर—संस्कृत पहला २०); दूसरा २५), तीसरा २५)
चौथा २५)
संगीत सम्राट् तानसेन—प्रभूदयाल मीतल मू० ३)
संगीताचार्य बैजू और गोपाल— " मू० १)५०
राजस्थान का लोकसंगीत—देवीलाल सामर मू० ३)
राजस्थान स्वरलहरी— " भाग १ मू० ३)
राजस्थान का लोकनृत्य " मू० २)
राजस्थान का लोकनाट्य " मू० २)
मृदंगवादन—मा० शंकरराव अलकूटकर भाग १ मू० २)५०
रागतत्त्वविबोध—श्रीनिवास (संस्कृत) मू० ४)
संगीत चूडामणि—कवि चक्रवर्ती (संस्कृत) मू० ६)५०
संगीत सुधासागर—प्राणकिशन चटर्जी मू० २)
गीतगोविंद, अभिनय सहित—(संस्कृत) के० वा० शास्त्री मू०२)

भरतार्णव—के० वासुदेव शास्त्री (हिन्दी-इंगलिश) मू० १५)
वीणालक्षणम् एवं वीणाप्रपाठक:—परमेश्वर (संस्कृत)
मू० ३)५०

संगीतज्ञों के संस्मरण —विलायतहुसेन खाँ मू० ३)
स्वरलिपि—स्व० रवीन्द्रनाथ ठाकुर के ५० सस्वर गीत (हिन्दी)
मू० २०)

हिन्दुस्तानी ख्याल गायकी—य०स०पंडित भाग १-४), २-४),
३-४), ४-४) और भाग ५-४)

मणिपुरी नर्तन—(गुजराती) मू० ७)
श्री रामकथा मन्दाकिनी (रामकथा के पद मय स्वरलिपि)
मू० ७)

रागज्योति—स्वामी कृपालानन्दजी (गुजराती) १-२), २-२)७५
नृत्य और स्वास्थ्य—डा० जान० एस० मानस मू० १)५०
भारतीय संगीत—आचार्य उत्तमराम शुक्ल मू० १२)
सितार सुबोधिनी—सुरेन्द्रनाथ बली मू० ४)
तबला प्रकाश—प्रो० बी० एल० यादव भाग १ मू० १)५०
भाग २ मू० ३)

राग प्रवीण—पं० रामकृष्ण व्यास (प्रेक्टीकल) मू० ६)

सितार वादन—प्रो० श० ग० व्यास भाग २ मू० १)
प्राथमिक संगीत " " भाग १ मू० १)७५
भाग २ मू० १)५०

राग बोध—देवधर भाग १ मू० १)२५. भाग २ मू० १)७५
माध्यमिक संगीत—प्रो० शं० व्यास भाग १ मू० २)५०
संगीत शास्त्र दर्शन—गां० म० वि० प्रयाग १)२५
संगीत राग दर्शन—अशोक वामन ठकार २)५०
नृत्याध्याय—अशोक मल्व (संस्कृत) १०)

रस कौमुदी—श्रीकंठ (संस्कृत-इंगलिश) १३)

काव्य और संगीत का पारस्परिक सम्बन्ध—डा० उमा मिश्र मू० १२)५०

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा—डा० रामचन्द्र नायक मू० १)५०

हिन्दुस्तानी संगीत शास्त्र—भगवतशरण पहला २); दूसरा ४)५०

स्वरगुंजन— " पहला ३), दूसरा ३)

नाट्शास्त्र—रघुवंश (हिन्दी) मू० १५)

भारतीय संगीत कोष—चौधरी (बंगला) मू० १३)

भातखण्डे स्मृति-ग्रन्थ—इ० क० विश्वविद्यालय २५)

भरत भाष्यम्—नान्यभूपाल (संस्कृत) ८)

उर्दू ग्रन्थ—मआदनुल मौसीक़ी ५)। म्यूजिक मास्टर २)५०
इन्डियन म्यूजिक—५)। मारिफुल्नगमात भाग दूसरा ५)

MUSIC BOOKS IN ENGLISH.

Music Mirror (Set of 6 issues) Articles & songs with different notations Rs.7/50

Folk Dance of Maharashtra—A. J. Agarkar 10/-

Bharat Natya & Its Costumes—G. S. Ghurye 4/50

Theory of Indian Music—Bishan Swarup 10/-

Dances of India—Raginidevi 6/-

History of Indian Music—Pingley 8/-

Music of India—N. Augustus Willard 12/-

Folk Dance of India—Projesh Banerjee 7/75

The Art of Kathakali—A. C. Pandya 18/-

The Dancing Foot—Govt. Publication	1/50
Indian Notation System— " "	-/35
Aspects of Indian Music— " Publication	1/-
Musical Instruments of India— " Publication	2/50
Classical Dance Poses of India—Gopi Nath	5/-
Evolution of Songs & Life of Great Musicians	3/37
Guitar Technic- Samirnath's	1/75
The Dance In India-Well illustrated—E. Bhavnani	65/-
The Music of India —H. A. Popley	5/-
The Music of India —S. Bandyopadhyay	5/50
Ragnidhi. Vol. 1 —V. Subbarao	3/-
Understanding Bharat Natyam—M. Sarabhai.	15/-
Bharat Natya & Other Dances of Tamil Nad.-E. K. Iyer	1/75
Film Seminar Report—Dr. R. M. Ray	10/-
Mustaq Hussain Khan—S. N. Akademi. (Monograph)	2/50
Kitab-I-Nauras—Ibrahim Adil shah	15/-
Spiritual Heritage of Tyagaraja-Dr. V. Raghvan	10/-
Anthology of 100 Songs of Tagore in staff notations,	Vol. I- 25/-
A Dictionary of S. I. Music & Musicians,	Vol. I- 7/-, II- 10/-
outh Indian Music Vol.	I-1/75, II-2/50, III- 7/-, IV- 7/-, V-5/-
Aid to the Teaching of Music—P. Sambamurthi	5/-
Great Musicians (South Indian)-P. Samba moorthy	2/-
Great Composers Vol. I " — " "	3/50
History of Indian Music " — " "	6/-
Elements of Western Music for S. Ind. M.- "	2/50